* 19th Year
* Issue: 258
* 25.01.2026 (SUNDAY)
* ROURKELA
* R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
* (Pages-6)
* Price:2.00

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

e-paper-www.thekalingasamachar.com

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISGARH

ओड़िशा का संप्रभु ओडिया:फर्स्ट एआई इकोसिस्टम की दिशा में बड़ा कदम

भुवनेश्वर २४/०१ (संवाददाता): ओडिशा सरकार ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए संप्रभु, ओडिया-फर्स्ट एआई इकोसिस्टम विकसित करने की दिशा में तेजी ला दी है। भुवनेश्वर में शनिवार को मुज्यमंत्री कार्यालय में हुई उच्च-स्तरीय बैठक में भारतीय एआई कंपनी सर्वम के नेतृत्व के साथ रणनीतिक साझेदारी की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई।

यह बैठक राज्य के विजन 2036 और विजन 2047 के अनुरूप सुरक्षित, समावेशी और संप्रभु एआई इकोसिस्टम बनाने के प्रयासों का हिस्सा है। बैठक में ओडिशा के मुज्यमंत्री, इलेज्ट्रॉनिज्स एवं आईटी मंत्री, मुज्य सचिव, प्रधान सचिव (इलेज्ट्रॉनिज्स एवं आईटी), प्रधान सचिव विज्ञ और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। सर्वम की टीम के साथ चर्चा में एआई को दीर्घकालिक सार्वजनिक क्षमता के रूप में स्थापित करने पर फोकस रहा। राज्य सरकार ने साझा, संप्रभु एआई इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने का अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसमें सुरक्षित कंप्यूट संसाधन और राज्य-शासित डेटा प्लेटफॉर्म शामिल हैं।

इसका उद्देश्य सार्वजनिक डेटा, एआई मॉडल और इंटेलिजेंस सिस्टम को ओडिशा की विश्वास सीमा के भीतर रखना है, ताकि खंडित निवेश से बचा जा सके और पैमाने पर सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित हो।

सरकार ने शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य सेवा, ई-गवर्नेंस और सार्वजनिक सुरक्षा जैसे प्रमुख क्षेत्रों में जनसंज्या-स्तर के वॉयस-सक्षम एआई एप्लिकेशन तैनात करने पर जोर दिया। ये एप्लिकेशन विशेष रूप से ग्रामीण, आदिवासी और कम साक्षरता वाले नागरिकों के लिए सरल संवादात्मक इंटरफेस प्रदान करेंगे, जिससे सरकारी योजनाओं, हकदारियों, लाभों और शिकायत निवारण की जानकारी अंतिम छोर तक आसानी से पहुंच सकेगी। इससे गवर्नेंस को मजबूत बनाने के साथ ही सेवा वितरण में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ेगी। कार्यान्वयन को तेज करने के लिए दोनों पक्षों ने एक समानांतर एक-वर्षीय निष्पादन ढांचे पर सहमति जताई।

इसमें विभाग डेटासेट तैयार करेंगे, प्राथमिकता वाले उपयोग के मामलों की पहचान करेंगे और मुज्य एआई इंफास्ट्रक्चर के साथ-साथ एप्लिकेशन विकसित करेंगे। साथ ही सरकारी अधिकारियों की ट्रेनिंग, अप्लाइड रिसर्च और लोकल टेज्निकल टैलेंट विकास पर भी चर्चा हुई, ताकि राज्य एआई सिस्टम को लंबे समय तक स्वयं गवर्न, बनाए रख और विकसित कर सके। राज्य ने 5 और 6 फरवरी 2026 को भुवनेश्वर में होने वाले ज्लैक स्वान समिट के दौरान सर्वम के साथ मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने की योजना बनाई है, जिससे साझेदारी औपचारिक रूप ले लेगी।

सर्वम एक भारतीय कंपनी है जो पज्लिक सेज्टर और बड़े पैमाने पर गवर्नेंस यूज केस के लिए मूलभूत एआई मॉडल विकसित करती है, जिसमें भारतीय भाषाओं, स्पीच और जनसंज्या-स्तर पर डिप्लॉयमेंट पर विशेष ध्यान है। यह ओडिशा के संप्रभु एआई लक्ष्यों के साथ पूरी तरह मेल खाती है। मीटिंग के बाद मुज्यमंत्री ने कहा, ओडिशा को सिर्फ टेज्नोलॉजी अपनाने वाला नहीं, बल्कि दूसरों के लिए रास्ता दिखाने वाला बनना चाहिए। एआई से हम गवर्नेंस और पज्लिक सर्विस में नए बेंचमार्क सेट कर सकते हैं।

पीएम मोदी ने एक क्लिक पर बांटे 61 हजार अपॉइंटमेंट लेटर

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): केंद्र सरकार की रोजगार सृजन प्राथमिकता को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार, 24 जनवरी 2026 को 18वें रोजगार मेले का उद्घाटन किया। इस भव्य कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देश भर के 61,000 से अधिक नवनियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए।वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान बोलते हुए, मोदी ने अपनी सरकार द्वारा लाए गए प्रावधानों की तारीफ़ की और बताया कि कैसे महिला कांस्टेबलों को पहचान मिल रही है। बांटे जाने वाले कुल अपॉइंटमेंट लेटर में से 49,200 गृह मंत्रालय और पैरामिलिट्री फ़ोर्स से जुड़े हैं... बड़ी संज्या में महिला कांस्टेबलों की नियुक्ति की जा रही है। यह इसलिए संभव हुआ है ज्योंकि पिछले 11 सालों में, हमारी सरकार ने बड़ी संज्या में सहायक प्रावधान पेश किए हैं। क्स्स्न की महिला टुकड़ियों को बॉर्डर पर ज़ीरो लाइन पर तैनात किया गया है। 26 जनवरी को, कर्तव्य पथ पर, सभी पुरुष टुकड़ी का नेतृत्व एक महिला असिस्टेंट कमांडेंट करेंगी, मोदी ने कॉन्फ्रेंस में कहा।रोज़गार मेला देश भर में 45 अलग-अलग जगहों पर आयोजित किया गया था, जिसमें देश के सभी हिस्सों से उज्मीदवार आए थे। PMO ने एक बयान में कहा कि उज्मीदवार भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में शामिल होंगे, जिनमें गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, विज्ञीय सेवा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, और अन्य शामिल हैं। बयान में आगे कहा गया है, रोज़गार सृजन को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता के अनुरूप, रोज़गार मेला इस विज़न को अमल में लाने के उद्देश्य से एक प्रमुख पहल है। इसमें कहा गया है कि इसकी शुरुआत के बाद से, देश भर में आयोजित रोज़गार मेलों के माध्यम से 11 लाख से ज़्यादा भर्ती पत्र जारी किए गए हैं।अपने संबोधन में पीएम मोदी ने युवाओं से अपील की कि वे केवल कर्मचारी के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य निर्माता के रूप में अपनी जिज़्मेदारी निभाएं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नई नियुक्तियां सरकारी संस्थानों की सेवा वितरण क्षमता को और मजबूत करेंगी।

संबलपुर पुस्तक मेला 2026 का उद्घाटन, युवाओं में किताबों के प्रति उत्साह साफ दिखाई दिया

भुवनेश्वर २४/०१ (संवाददाता): केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को संबलपुर पुस्तक मेले का उद्घाटन किया और इस अवसर पर युवाओं में किताबों के प्रति बढ़ते उत्साह की सराहना की। उन्होंने कहा कि पुस्तक मेला न केवल पढ़ाई और किताबों के प्रति रुचि बढ़ाने का मंच है, बल्कि यह क्षेत्र में साहित्य, शिक्षा और शोध की संस्कृति को भी प्रोत्साहित करता है। धर्मेंद्र प्रधान ने बताया कि संबलपुर में पढ़ाई और लेखन के लिए एक मजबूत बुनियाद मौजूद है। यहां विश्वविद्यालय, स्कूल और कॉलेज हैं, जो शोध और शिक्षा को बढ़ावा देते हैं। इस पुस्तक मेले में युवाओं की भागीदारी देखकर स्पष्ट होता है कि नई पीढ़ी में पढ़ने और सीखने का उत्साह कितना प्रबल है। उन्होंने कहा कि किताबें सिर्फ ज्ञान का स्रोत नहीं हैं, बल्कि यह सोच और विचारों को विकसित करने का माध्यम भी हैं।

केंद्रीय मंत्री ने यह भी कहा कि संबलपुर पुस्तक मेला साहित्य प्रेमियों, छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। यहां आने वाले युवा न केवल किताबें खरीदते हैं, बल्कि विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्धक चर्चाओं और सेमिनारों में भी भाग लेते हैं। इससे उनकी शैक्षणिक और बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती है।

धर्मेंद्र प्रधान ने मेले में विभिन्न किताबों के स्टॉल और पुस्तकों के संग्रह की प्रशंसा की और कहा कि यह मेला स्थानीय लेखकों और प्रकाशकों को अपने कार्य को प्रदर्शित करने का भी एक महत्वपूर्ण मंच देता है। उन्होंने उज्मीद जताई कि इससे संभलपुर और ओडिशा के साहित्यिक परिदृश्य को और मजबूती मिलेगी। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ने युवाओं से अपील की कि वे किताबों के प्रति अपनी रुचि बनाए रखें और पुस्तक मेलों में सक्रिय रूप से भाग लें। उन्होंने कहा कि किताबें केवल परीक्षा की तैयारी का साधन नहीं हैं, बल्कि यह ज्ञान, सोच और दृष्टिकोण का विकास करने में सहायक हैं। संभलपुर पुस्तक मेला स्थानीय समाज और शिक्षा जगत के लिए भी खास महत्व रखता है। यह मेले के माध्यम से युवा लेखक और शोधकर्ता अपने विचारों को साझा कर सकते हैं और नई पीढ़ी को प्रेरित कर सकते हैं। इस मेला में साहित्यिक चर्चा, किताबों की प्रदर्शनी और लेखकों से मिलने का मौका युवाओं के लिए ज्ञानवर्धक साबित होता है। कुल मिलाकर, संभलपुर पुस्तक मेला 2026 ने युवाओं में किताबों के प्रति जोश और पढ़ाई के प्रति उत्साह को उजागर किया। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के अनुसार, यह मेला न केवल शिक्षा और साहित्य को बढ़ावा देता है, बल्कि युवा पीढ़ी में सोचने और सीखने की प्रेरणा भी जगाता है।

पार्टी लाइन का कभी उल्लंघन नहीं किया-शशि थरूर

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने शनिवार को कहा कि उन्होंने संसद में पार्टी के घोषित रुख का कभी उल्लंघन नहीं किया और सैद्धांतिक रूप से उनकी एकमात्र सार्वजनिक असहमति 'ऑपरेशन सिंदूर' को लेकर थी।थरूर ने यहां केरल साहित्य महोत्सव के एक सत्र के दौरान सवालों का जवाब देते हुए कहा कि उन्होंने उस मुद्दे पर कड़ा रुख अपनाया था और उन्हें इसका "खेद नहीं" है। उनका यह बयान इन हालिया खबरों के बीच आया है जिनमें "थरूर के पार्टी नेतृत्व से मतभेद" की बात कही गई है।ऐसी अटकलें हैं कि थरूर इस बात से "आहत" हैं कि राहुल गांधी ने हाल में कोच्चि में एक कार्यक्रम के दौरान मंच पर उनके मौजूद होने के बावजूद उनके नाम का उल्लेख नहीं किया और राज्य के नेताओं द्वारा बार-बार उन्हें "दरकिनार" करने की कोशिश की जा रही है।थरूर ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि एक पर्यवेक्षक और लेखक के रूप में उन्होंने पहलगाम घटना के बाद एक अखबार में स्तंभ लिखा था जिसमें उन्होंने कहा था कि इसकी सजा मिलनी चाहिए और ठोस कार्रवाई होनी चाहिए।उन्होंने कहा कि भारत विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, ऐसे में उसे पाकिस्तान के साथ लंबे टकराव में नहीं पड़ना चाहिए और कोई भी कार्रवाई आतंकवादी शिविरों को निशाना बनाने तक सीमित होनी चाहिए।कांग्रेस सांसद ने कहा कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि भारत सरकार ने ठीक वही किया जैसा उन्होंने कहा था। थरूर ने कहा कि देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ही यह प्रश्न किया था कि "अगर भारत खत्म हो जाएगा तो कौन जीवित रहेगा?" उन्होंने कहा, "जब भारत दांव पर हो, जब भारत की सुरक्षा और दुनिया में उसका स्थान दांव पर हो तो भारत पहले आता है।"

यूडीएफ-एलडीएफ के कुशासन का होगा अंत, भाजपा लाएगी विकास का युग-मोदी

तिरुवनंतपुरम २४/०१ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को चुनाव वाले राज्य तिरुवनंतपुरम के अपने दौरे के बाद कहा कि केवल भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए ही विकासशील केरलम के सपने को साकार कर सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि यूडीएफ और एलडीएफ को राज्य के विकास में कोई दिलचस्पी नहीं है। एज़्स पर एक पोस्ट में पीएम मोदी ने लिखा कि कल तिरुवनंतपुरम का दौरा अविस्मरणीय था। केवल भाजपा-एनडीए ही विकास शील केरलम के सपने को साकार कर सकता है, जबकि यूडीएफ और एलडीएफ को विकास में कोई दिलचस्पी नहीं है। एक दिन पहले, प्रधानमंत्री ने तीन अमृत भारत एज़्सप्रेस ट्रेनों और एक यात्री ट्रेन सहित चार नई ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और तिरुवनंतपुरम में विभिन्न विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी और उनका उद्घाटन किया।

तिरुवनंतपुरम में एक सभा को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने तिरुवनंतपुरम नगर निगम में भाजपा की ऐतिहासिक जीत की सराहना की और कहा कि यह वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडी एफ) और संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) द्वारा दशकों से की गई उपेक्षा का अंत और विकास और सुशासन के एक नए युग की शुरुआत है।प्रधानमंत्री मोदी ने भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए दोनों मोर्चों की आलोचना भी की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि एलडीएफ और यूडीएफ दोनों ने ही अलग-अलग तरीकों से केरल को भ्रष्टाचार, कुप्रबंधन और तुष्टीकरण की राजनीति के दुष्चक्र में धकेल दिया है। भले ही वे अलग-अलग झंडे और चिन्हों का इस्तेमाल करते हों, लेकिन उनकी मूल राजनीतिक रणनीति और एजेंडा लगभग एक जैसे ही हैं.

जन गण मन की तरह वंदे मातरम के लिए भी नियम, प्रोटोकॉल को लेकर मंथन कर रही मोदी सरकार

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): सरकार वंदे मातरम को राष्ट्रगान जन गण मन के समान दर्जा देने की तैयारी कर रही है। हाल ही में राष्ट्रगान गाने के नियमों और प्रोटोकॉल पर चर्चा के लिए एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गई थी। इंडियन एज़्सप्रेस के अनुसार, बैठक में यह निर्धारित करने का प्रयास किया गया कि ज़्या वंदे मातरम गाने के लिए भी जन गण मन की तरह कोई निर्धारित नियम, आचरण या कानूनी दायित्व होने चाहिए। यह कदम सरकार के उस प्रयास का हिस्सा है, जिसे सज़ारूढ़ भाजपा ने वंदे मातरम के प्रति सज़्मान बढ़ाने का प्रयास बताया है। भाजपा का आरोप है कि कांग्रेस पार्टी ने 1937 में गीत के कुछ महत्वपूर्ण अंशों को हटाकर इसका महत्व कम कर दिया। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है जब केंद्र सरकार वंदे मातरम के उपलक्ष्य में एक साल तक चलने वाले उत्सव का आयोजन कर रही है। उत्सव का पहला चरण नवंबर में, दूसरा इस महीने, तीसरा अगस्त 2026 में और चौथा नवंबर 2026 में संपन्न हुआ। गृह मंत्रालय द्वारा बुलाई गई इस बैठक में वरिष्ठ अधिकारियों ने इस बात पर चर्चा की कि राष्ट्रगान कब गाया जाना चाहिए, ज़्या इसे राष्ट्रगान के साथ गाया जाना चाहिए और ज़्या इसके अपमान के लिए कोई दंडात्मक प्रावधान होना चाहिए।हाल के वर्षों में, राष्ट्रीय गान गाने के लिए एक रूपरेखा तैयार करने और यह स्पष्ट करने के लिए कि ज़्या राष्ट्रीय सज़्मान के अपमान की रोकथाम अधिनियम, 1971 के तहत दंड लगाया जा सकता है.

अब हर गांव तक पहुंचा विकास, उप्र दिवस पर बोले अमित शाह-भाजपा सरकार ने बदली प्रदेश की तकदीर

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कांग्रेस, समाजवादी पार्टी (एसपी) और बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) समेत विपक्षी दलों पर तीखा हमला बोलते हुए उन पर अपने शासनकाल में उज़र प्रदेश को बीमार राज्य बनाने का आरोप लगाया। वहीं उन्होंने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार ने इसे एक प्रगतिशील राज्य में बदल दिया है। लखनऊ में उज़र प्रदेश दिवस के अवसर पर बोलते हुए शाह ने भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार के कार्यकाल में हासिल विकास की व्यापकता पर प्रकाश डाला और कहा कि पिछले कुछ वर्षों में राज्य ने अभूतपूर्व प्रगति देखी है। उन्होंने जोर देकर कहा कि दशकों से चली आ रही गतिरोध और उपेक्षा को उलटते हुए अब विकास उज़र प्रदेश के हर गांव तक पहुंच चुका है।

शाह ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि एक समय था जब उज़र प्रदेश को श्रम का स्रोत माना जाता था। आज यह भारत की अर्थव्यवस्था का प्रेरक बल बन गया है। कांग्रेस, सपा और बसपा ने इसे %बीमार% राज्य बना दिया था। भाजपा सरकार ने इसे एक प्रगतिशील राज्य में बदल दिया है और अब विकास हर गांव तक पहुंच चुका है। केंद्रीय गृह मंत्री ने 15 अगस्त 2047 तक उज़र प्रदेश को पूर्ण विकसित राज्य में बदलने की उज़्मीद भी जताई, जब देश अपनी स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ मनाएगा।

अमित शाह ने कहा कि 15 अगस्त 2047 को, जब देश अपनी स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ मनाएगा, उज़र प्रदेश एक पूर्ण विकसित राज्य होगा और विकसित भारत का अभिन्न अंग होगा। उज़र प्रदेश भारत का दिल और आत्मा है। उज़र प्रदेश भारत का विकास इंजन बन रहा है। इस कार्यक्रम के दौरान, शाह ने अंतरिक्ष यात्री और भारतीय वायु सेना के विंग कमांडर शुभांशु शुज़्ला को नवाचार और अंतरिक्ष अन्वेषण में उनके योगदान के लिए %उज़र प्रदेश गौरव% सज़्मान से सज़्मानित किया। उज़र प्रदेश के मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुज़्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और बृजेश पाठक सहित कई वरिष्ठ नेता और अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

उज़र प्रदेश दिवस प्रतिवर्ष 24 जनवरी को मनाया जाता है, जो 1950 में संयुक्त प्रांत का नाम बदलकर उज़र प्रदेश रखे जाने की स्मृति में मनाया जाता है, जो भारतीय संविधान को अपनाने से दो दिन पहले हुआ था। तब से, राज्य ने भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उज़र प्रदेश ने भारत के औद्योगिक विकास में भी योगदान दिया है, जिसमें कानपुर एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में उभरा है। नवंबर 2000 में, उज़राखंड नामक पहाड़ी राज्य को उज़र प्रदेश से अलग करके बनाया गया, जिससे इस क्षेत्र के प्रशासनिक परिदृश्य में और भी बदलाव आया।

विविध समाचार

गणतंत्र दिवस पर देश में रक्तपात की साजिश नाकाम, पंजाब पुलिस ने 5 आतंकी दबोचे!

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): गणतंत्र दिवस से ठीक पहले पंजाब पुलिस ने देश के दुश्मनों के नापाक इरादों को मिट्टी में मिला दिया है। शुक्रवार को एक बड़े ऑपरेशन के दौरान पुलिस ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन बज़्बर खालसा इंटरनेशनल (क्च्यद्ग) के दो अलग-अलग आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया। पाकिस्तान की ढ्ढस्ढ्ढ और अमेरिका में बैठे हैंडलर्स के इशारे पर पंजाब को दहलाने की साजिश रच रहे 5 खूंखार आतंकियों को सलाखों के पीछे भेज दिया गया है। पुलिस ने बताया कि राज्य के विभिन्न इलाकों से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद भी बरामद किया गया है।

पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने बताया कि अमृतसर स्थित राज्य विशेष अभियान प्रकोष्ठ (एसएसओसी) ने बज़्बर खालसा के सदस्य शरणप्रीत सिंह की गिरफ़्तारी के साथ ही एक सुरक्षा प्रतिष्ठान पर होने वाले संभावित हमले को टाल दिया। शरणप्रीत सिंह, तरन तारन के दिनेवाल गांव का रहने वाला है।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि शरणप्रीत के पास से एक हथगोला, नौ एमएम की एम ग्लॉक पिस्तौल, पांच कारतूस और 65 ग्राम आईईसी (मेथाम्फ़ेटामाइन) मादक पदार्थ जब्त किया गया। डीजीपी यादव ने पाकिस्तान के आईएसआई समर्थित आतंकी नेटवर्क के खिलाफ एक और बड़ी सफलता की जानकारी देते हुए बताया कि होशियारपुर पुलिस ने जालंधर की काउंटर इंटेलिजेंस के साथ संयुक्त अभियान में बीकेआई के चार सदस्यों को गिरफ़्तार किया है। इनके पास से आरडीएज़्स आधारित 2.5 किलोग्राम का एक विस्फोटक उपकरण और कारतूसों के साथ दो पिस्तौल जब्त की गईं।

पुलिस महानिदेशक यादव ने एज़्स पर एक पोस्ट में कहा, ''इस आतंकी नेटवर्क का संचालन अमेरिका स्थित बीकेआई के संचालकों द्वारा किया जा रहा था।

प्रारंभिक जांच से पता चला है कि बरामद आईईडी आगामी गणतंत्र दिवस समारोह के मद्देनजर लक्षित आतंकी हमले के लिए तैयार किया गया था।''

इस संबंध में गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत होशियारपुर के गढ़शंकर पुलिस थाने में एक प्राथमिकी दर्ज की गई है और मामले की विस्तृत जांच जारी है। उन्होंने अपने पोस्ट में कहा, '' होशियारपुर के गढ़शंकर से गिरफ़्तार किए गए आरोपियों की पहचान दिलजोत सिंह सैनी, हरमन उर्फ हैरी, अजय उर्फ मेहरा और अर्शदीप सिंह उर्फ अर्श कंधोला के रूप में हुई है।''

अधिकारी ने कहा कि प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि शरणप्रीत विदेश में बैठे बीकेआई के आतंकियों निशान सिंह उर्फ निशान जौरियन, आदेशबीर सिंह उर्फ आदेश जमराई और सिमरनजीत सिंह उर्फ सिज़्मा देओल के आदेश पर काम कर रहा था।

प्रयागराज विवाद पर मायावती की बड़ी चेतावनी, धर्म-राजनीति का मेल देश के लिए खतरनाक

लखनऊ २४/०१ (संवाददाता): उज़र प्रदेश की पूर्व मुज़्यमंत्री और बसपा सुप्रीमो मायावती ने शनिवार को धर्म और राजनीति को अलग रखने का आह्वान किया और चेतावनी दी कि इनके बढ़ते मेलजोल से विवाद, तनाव और सामाजिक अशांति बढ़ रही है। उनकी ये टिप्पणी प्रयागराज में माघ मेले को लेकर चल रहे विवाद और शंकराचार्य को संगम में स्नान करने से रोके जाने के आरोपों के बीच आई है। उन्होंने एक पोस्ट में कहा कि इस प्रवृज़ि से जनता के बीच नए संघर्ष और चिंताएं पैदा हो रही हैं। प्रयागराज स्नान समारोह विवाद को एक ताजा उदाहरण बताते हुए मायावती ने आगाह किया कि संकीर्ण राजनीतिक लाभ के लिए धर्म को राजनीति से जोड़ना अंतर्निहित रूप से खतरनाक है।

बसपा प्रमुख ने जोर दिया कि देश का संविधान और कानून स्पष्ट रूप से राजनीति को धर्म से और धर्म को राजनीति से दूर रखने की परिकल्पना करते हैं, जबकि जन कल्याण और जन-केंद्रित शासन को प्राथमिकता देते हैं। उन्होंने उज़र प्रदेश दिवस के अवसर पर राज्य के लोगों को शुभकामनाएं भी दीं। उनकी ये टिप्पणियां माघ मेले के दौरान शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को संगम में स्नान करने से कथित तौर पर रोके जाने को लेकर चल रही तीखी राजनीतिक बयानबाजी के बीच आई हैं। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इससे पहले भाजपा के नेतृत्व वाली उज़र प्रदेश सरकार पर सनातन धर्म की परंपराओं का उल्लंघन करने का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा कि संत और ऋषि गौरव का स्रोत हैं और प्रमुख धार्मिक आयोजनों के दौरान उनसे मिलकर आशीर्वाद लेना धार्मिक परंपरा का अभिन्न अंग है। याद ने आरोप लगाया कि भाजपा ने अपने अधिकारियों के माध्यम से जानबूझकर संतों और ऋषियों का अपमान किया है और संवैधानिक मूल्यों, भाईचारे और सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने में विफल रही है।हालांकि, प्रयागराज प्रशासन ने इन आरोपों को खारिज कर दिया है। संभागीय आयुक्त सौज़्या अग्रवाल ने कहा कि शंकराचार्य बिना पूर्व अनुमति के लगभग 200 अनुयायियों के साथ संगम पर पहुंचे, जबकि वहां भारी भीड़ थी। उन्होंने दावा किया कि बैरिकेड तोड़ दिए गए और वापसी का रास्ता लगभग तीन घंटे तक अवरुद्ध रहा, जिससे श्रद्धालुओं को असुविधा हुई और सुरक्षा का गंभीर खतरा पैदा हुआ।

बजट सत्र से पहले संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बुलाई सर्वदलीय बैठक

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बजट सत्र से पहले प्रमुख राष्ट्रीय मुद्दों और विधायी कार्यों पर चर्चा करने के लिए 27 जनवरी को सुबह 11 बजे सर्वदलीय बैठक बुलाई है। सूत्रों ने इस बात की जानकारी दी है। यह बैठक संसद के मुज़्य समिति कक्ष में होगी और इसमें सत्र का एजेंडा तय किया जाएगा, जो 28 जनवरी से शुरू होकर 2 अप्रैल तक चलेगा। बजट सत्र 28 जनवरी से शुरू होकर 2 अप्रैल तक चलेगा, जिसमें एक बार का अवकाश होगा। पहला चरण 28 जनवरी से 13 फरवरी तक निर्धारित है, जबकि दूसरा चरण 9 मार्च से 2 अप्रैल तक चलेगा।बजट सत्र में 30 बैठकें होंगी, जिसमें केंद्रीय बजट 2026-27 1 फरवरी को प्रस्तुत किया जाएगा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू लोकसभा और राज्यसभा दोनों के सदस्यों को संबोधित करते हुए सत्र का औपचारिक उद्घाटन करेंगी।

बजट से पहले, विज़ मंत्रालय ने बुधवार को ङ्ग पर पहले से घोषित सीमा शुल्क दरों पर प्रकाश डाला। पिछले बजट सत्रों के दौरान, भारत को वैश्विक इलेज़्ट्रॉनिज़्स केंद्र के रूप में मजबूत करने और इलेज़्ट्रॉनिक सामानों के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए एक निर्णायक कदम के रूप में, केंद्रीय विज़ मंत्रालय ने ज़्लैट पैनल डिस्प्ले पर मूल सीमा शुल्क (बीसीडी) को बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने की घोषणा की थी। इस कदम का उद्देश्य वस्तुओं पर लागू उल्टी शुल्क संरचना को ठीक करना था। मंत्रालय ने ओपन सेल और प्रमुख घटकों पर बीसीडी को घटाकर 5 प्रतिशत भी कर दिया था।

विज़ मंत्री ने ङ्ग पर एक पोस्ट में कहा, हमारी मेक इन इंडिया नीति के अनुरूप, और उल्टी शुल्क संरचना को ठीक करने के लिए, मैं इंटरएज़्टिव ज़्लैट पैनल डिस्प्ले (आईएफपीडी) पर बीसीडी को 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने और ओपन सेल और अन्य घटकों पर बीसीडी को घटाकर 5 प्रतिशत करने का प्रस्ताव करता हूं। एलसीडी/एलईडी टीवी के लिए ओपन सेल्स के स्थानीय उत्पादन को और बढ़ावा देने के लिए, ओपन सेल्स के कुछ हिस्सों पर बीसीडी (बैकग्राउंड कंट्रोल) को पूरी तरह से माफ कर दिया गया है, जो पहले की गई छूटों को आगे बढ़ाता है।सर्वदलीय बैठक में सत्र के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए एजेंडा पर चर्चा की जाएगी। पिछले दो सत्रों में, जिनमें 2025 के मानसून और शीतकालीन सत्र शामिल हैं, विपक्षी दलों ने मतदाता सूचियों के विशेष गहन संशोधन (एसआईआर) पर चर्चा करने की मांग की है, जो पूरे देश में चल रहा है। पिछले सत्र में, कुछ नेताओं ने लाल किले के पास हुए दिल्ली विस्फोट, वायु प्रदूषण और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने का आह्वान किया था। अंत में, सरकार ने %वंदे मातरम% गीत की 150वीं वर्षगांठ पर और %चुनाव सुधार% पर विशेष चर्चा करने का निर्णय लिया।

सीजेआई ने हरियाणा की जेलों में कौशल विकास और पॉलिटेज़्निक पाठ्यक्रमों का उद्घाटन किया

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): हरियाणा की विभिन्न जेलों में कैदियों के लिए को कौशल विकास केंद्र, पॉलिटेज़्निक डिप्लोमा पाठ्यक्रम और आईटीआई स्तर के व्यावसायिक कार्यक्रम शुरू किए गए।प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत ने गुरुग्राम के जिला कारागार भोंडसी से 'सलाखों के पीछे जीवन को सशक्त बनाना, वास्तविक परिवर्तन- सुधारात्मक न्याय का नया प्रतिमान' परियोजना के तहत इन पहलों का उद्घाटन किया।एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार, इस सुधारात्मक प्रयास के तहत हरियाणा की जेलों में कौशल विकास केंद्र, पॉलिटेज़्निक डिप्लोमा कार्यक्रम और आईटीआई स्तर के व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम औपचारिक रूप से शुरू किए गए।इन पहलों का उद्देश्य व्यवस्थित ढांचागत शिक्षा एवं कौशल विकास के माध्यम से सुधारात्मक पारिस्थितिकी तंत्र को नया आकार देना था। इसी कार्यक्रम के दौरान प्रधान न्यायाधीश ने पंजाब, हरियाणा और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ में एक महीने तक चलने वाले राज्यव्यापी नशा विरोधी जागरूकता अभियान का भी आरंभ किया, जिसे राज्य में मादक द्रव्यों के सेवन की बढ़ती चुनौती का मुकाबला करने के लिए तैयार किया गया था।

ज़्या ऑपरेशन सिंदूर में भारत की पाकिस्तान से पहले ही दिन हार हुई? कांग्रेस नेता पृथ्वीराज का ये कैसा दावा

नयी दिल्ली २४/०१ (संवाददाता): महाराष्ट्र के पूर्व मुज़्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पृथ्वीराज चव्हाण ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर बड़ा दावा किया है। पुणे में पृथ्वीराज चव्हाण ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के पहले दिन ही हमारी करारी हार हुई। 7 तारीख को आधे घंटे तक चली हवाई झड़प में हमारी करारी हार हुई, चाहे लोग इसे मानें या न मानें। भारतीय विमानों को मार गिराया गया। वायुसेना पूरी तरह से ठप हो गई थी और एक भी विमान नहीं उड़ा। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि अगर ग्वालियर, बठिंडा या सिरसा से कोई भी विमान उड़ान भरता, तो पाकिस्तान द्वारा उसे मार गिराए जाने की प्रबल संभावना थी, इसीलिए वायुसेना को पूरी तरह से ठप कर दिया गया था। पृथ्वीराज चव्हाण ने आगे कहा कि हाल ही में हमने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देखा कि सेना की एक किलोमीटर की भी हलचल नहीं हुई... दो-तीन दिनों में जो कुछ भी हुआ, वह सिर्फ हवाई युद्ध और मिसाइल युद्ध था। भविष्य में भी युद्ध इसी तरह लड़े जाएंगे। ऐसे में ज़्या हमें वाकई 12 लाख सैनिकों की सेना रखने की जरूरत है, या हम उनसे कोई और काम नहीं करवा सकते? वहीं, चव्हाण ने अपनी उस भविष्यवाणी पर स्पष्टीकरण दिया जिसमें उन्होंने कहा था कि 19 दिसंबर को देश में इतिहास का सबसे बड़ा राजनीतिक उथल-पुथल होगा और प्रधानमंत्री बदलेंगे, जो कि एक मराठी नेता होंगे। पत्रकार भवन में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने अपनी भविष्यवाणी का संदर्भ समझाया।पत्रकारों को संबोधित करते हुए चव्हाण ने जेफरी एपस्टीन मामले से संबंधित अमेरिका में हो रहे घटनाक्रमों के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि लगभग 1995-96 में अमेरिकी व्यवसायी जेफरी एपस्टीन सुर्खियों में आए और बाद में पता चला कि वे नाबालिग लड़कियों की यौन तस्करी सहित अवैध गतिविधियों में शामिल थे। आरोप है कि एपस्टीन ने हनी-ट्रैप के जरिए कई राजनीतिक हस्तियों को फंसाया और उनकी रिकॉर्डिंग की। पीड़ितों की शिकायतों के बाद जांच की गई, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें यौन तस्करी और नाबालिगों के शोषण के गंभीर आरोपों में दोषी ठहराया गया। बाद में जेल में संदिग्ध परिस्थितियों में एपस्टीन की मृत्यु हो गई, जिसे आधिकारिक तौर पर आत्महत्या घोषित किया गया, हालांकि इसने अमेरिका में बड़ा विवाद खड़ा कर दिया।

आमिर खान और जावेद अख्तर ज़्या मराठी बोलते हैं-नितेश राणे

मुंबई २४/०१ (संवाददाता): महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) से कथित रूप से जुड़े लोगों के एक समूह द्वारा मीरा रोड में एक दुकानदार पर मराठी न बोलने के कारण हमला करने के कुछ दिनों बाद, राज्य के मंत्री नितेश राणे ने उन्हें चुनौती दी कि वे साहस दिखाएं और नल बाज़ार और मोहज़्मद अली रोड जैसे इलाकों में जाएं और वहां लोगों से मराठी बोलने के लिए कहें।

घटना पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राणे ने सवाल किया कि मराठी न बोलने वाली मशहूर हस्तियों को कभी निशाना ज़्यों नहीं बनाया जाता।नितेश राणे ने कहा कि एक हिंदू को मराठी न बोलने पर पीटा गया। अगर उनमें हिज़्मत है, तो नल बाज़ार, मोहज़्मद अली रोड पर जाएं और वहां लोगों से मराठी बोलने को कहें। उनमें इतनी हिज़्मत नहीं है कि वे वहां जाकर टोपी पहनने वालों को पीटें। ज़्या जावेद अज़्तर और आमिर खान मराठी बोलते हैं? एक गरीब हिंदू को ज़्यों पीटा जा रहा है? आक्रामक लहजे में राणे ने आलोचकों को सरकार के धैर्य की परीक्षा न लेने की चेतावनी दी और कहा कि इससे उन्हें अपनी तीसरी आंख खोलने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।काशीमीरा पुलिस स्टेशन में दर्ज एफआईआर के अनुसार, कथित तौर पर एमएनएस बैज पहने सात अज्ञात लोग सुबह करीब 10.30 बजे दुकान में पानी मांगने घुसे।

विजयन ने कांग्रेस नेता वेणुगोपाल की सार्वजनिक बहस की चुनौती स्वीकार की

तिरुवनंतपुरम २४/०१ (संवाददाता):केरल के मुज़्यमंत्री पिनराई विजयन ने रविवार को कहा कि वह संसद में राज्य के विपक्षी कांग्रेस नीत संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ)के सांसदों के प्रदर्शन पर सार्वजनिक बहस के लिए तैयार हैं। उन्होंने इसी के साथ विपक्षी मोर्चे से इसके लिए तारीख और समय तय करने का आग्रह किया। मुज़्यमंत्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) महासचिव के सी वेणुगोपाल के बयान के संबंध में संवाददाताओं द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब दे रहे थे, जिसमें उन्होंने कहा था कि ज़्या विजयन इस मामले पर खुली बहस के लिए तैयार हैं।

वेणुगोपाल का बयान वरिष्ठ वाम नेता द्वारा की गई हालिया आलोचना के बाद आया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि यूडीएफ सांसद संसद में केरल के विकास के मुद्दों को उठाने में विफल रहे हैं और कई अवसरों पर राज्य के हितों के खिलाफ रुख अपनाया है।

विजयन ने कहा, ''निश्चित रूप से मैं (खुली बहस के लिए) तैयार हूं। उन्हें समय और स्थान तय करने दीजिए।'' उन्होंने सवाल किया कि ज़्या वेणुगोपाल को राज्य के यूडीएफ सांसदों के प्रदर्शन की जानकारी नहीं है।मुज़्यमंत्री ने यूडीएफ सांसदों पर केरल को बर्बाद करने की केंद्र सरकार की कोशिशों में साथ देने का आरोप लगाया। विजयन ने दावा किया कि विपक्षी सांसदों ने केंद्र को राज्य के खिलाफ रुख अपनाने की सलाह भी दी। उन्होंने आरोप लगाया कि हाल ही में केरल को अत्यधिक गरीबी मुक्त राज्य घोषित किए जाने के बाद विपक्षी सांसदों ने संसद में कुछ प्रश्न उठाकर राज्य में सभी एएवाई (अंत्योदय अन्न योजना) राशन कार्डों को समाप्त करने का प्रयास किया।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

बड़ी इलायची खाने से मिलेंगे बेमिसाल फायदे

भारतीय रसोई में मौजूद मसाले खाने का स्वाद बढ़ाने के साथ सेहत को दुरुस्त रखने में मदद करते हैं। इन्हीं में बड़ी इलायची पोषक तत्व, एंटी-ऑक्सीडेंट्स, एंटी-माइक्रोबियल, एंटी-इंफ्लेमेट्री आदि गुणों से भरपूर होती है। इसे काली या भूरी इलायची भी कहा जाता है। इसके सेवन से इम्यूनिटी व पाचन तंत्र मजबूत होता है। ऐसे में बीमारियों से लड़ने की शक्ति मिलती है। साथ ही पेट संबंधी समस्याओं से बचाव रहता है।

अस्थमा में फायदेमंद

इसका सेवन करने से सांस संबंधी समस्याओं से छुटकारा मिलता है। यह फेफड़ों को साफ करके उसे बेहतर तरीके से सांस लेने में मदद करती है। ऐसे में अस्थमा के मरीजों को इसका सेवन करना चाहिए।

कैंसर का खतरा करें कम

बड़ी इलायची में मौजूद पोषक तत्व व एंटी-ऑक्सीडेंट्स गुण कैंसर की कोशिकाओं को पनपने से रोकते हैं। ऐसे में इस गंभीर बीमारी की चपेट में आने का खतरा कई गुणा कम रहता है।

एसिडिटी से राहत दिलाए

आजकल लोगों को एसिडिटी की समस्या अधिक हो रही है। इसके पीछे का कारण ज्यादा मसालेदार व ऑयली खाने का सेवन करना है। इसके कारण एसिडिटी, अपच व पेट संबंधी अन्य समस्याएं होने लगती है। ऐसे में इससे बचने के लिए डेली डाइट में बड़ी इलायची सेवन करना फायदेमंद माना गया है। इसके सेवन से एसिडिटी की परेशानी दूर होकर पाचनतंत्र दुरुस्त रहने में मदद मिलती है।

सिर व शरीर दर्द से दिलाए छुटकारा

सिरदर्द से राहत दिलाने में भी काली इलायची कारगर मानी गई है। इसके सेवन से सिर व शरीर के किसी भी हिस्से का चुटकियों में ठीक हो जाते हैं। इसके साथ ही सुस्ती, आलस व थकान से भी आराम मिलता है। एक्सपर्ट्स के अनुसार काली इलायची के पाउडर को शहद के साथ खाने से शरीर का दर्द मिनटों में दूर हो जाता है।

इम्यूनिटी बढ़ाए

काली इलायची पोषक तत्व, एंटी-ऑक्सीडेंट व औषधीय गुण होते हैं। इसका सेवन करने से इम्यूनिटी बढ़ने में मदद मिलती है। ऐसे में इसका सेवन सर्दी-जुकाम, खांसी की समस्या से बचाव रहता है।

मुंह की दुर्गंध भगाए

अक्सर कई लोगों को मुंह से दुर्गंध आने की परेशानी होती है। ऐसे में बड़ी इलायची को चबा-चबाकर खाने से फायदा मिलता है। यह मुंह की बदबू दूर करने में कारगर मानी जाती है।

क्या आप भी हाइपरथायरायडिज्म की समस्या से जूझ रहे हैं

आज के समय में हाइपरथायरायडिज्म की समस्या से बहुत से लोग पीड़ित होते हैं। इस स्थिति में थायरॉयड ग्रंथि आवश्यकता से अधिक थायरॉयड हार्मोन का उत्पादन करने लगती है।

आज के समय में हाइपरथायरायडिज्म की समस्या से बहुत से लोग पीड़ित होते हैं। इस स्थिति में थायरॉयड ग्रंथि आवश्यकता से अधिक थायरॉयड हार्मोन का उत्पादन करने लगती है। जिसकी वजह से शरीर में कई तरह की दिक्कतें होने लगती हैं, जैसे अनिद्रा, हार्ट रेट का फ्लक्चुएट होना, कमजोरी महसूस होना, वजन घट जाना, कपकंपी होना, दस्त और थायराइड का बढ़ना आदि। लेकिन आज के समय में ऐसी किसी भी स्थिति में घबराने की बात नहीं होती। क्योंकि ऐसी ढेरों दवा या खाद्य सामग्री होती हैं, जो थायराइड से संबंधित समस्या और उसके लक्षणों को कम कर सकती है। हमारे बड़े बुजुर्ग भी अक्सर कहा करते थे, कि अच्छा खाना ही आपको बीमारियों से लड़ने की शक्ति भी देता है और बचाकर भी रखता है। तो चलिए जानते है कि आखिर थायरॉयडिज्म की स्थिति से जूझने वाले लोगों के लिए क्या खाना सही है और क्या खाना गलत।

न्यूट्रिएंट रिच फूड खाएं

इस स्थिति से निपटने के लिए आपको ऐसी खाद्य सामग्री का सेवन भी करना होगा। जिनके अंदर कई तरह के विटामिन-मिनरल्स और खनिज पदार्थ शामिल हों। इसके लिए आप मशरूम, ड्राई फ्रूट्स, सीड्स, एवोकाडो, आदि का सेवन कर सकते हैं। इन खाद्य सामग्रियों के अंदर मौजूद कैल्शियम, जिंक, आयरन जैसे तत्व आपको सूजन से भी बचाते हैं और आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बेहतर करते हैं। यही नहीं इन खाद्य सामग्रियों के जरिए हड्डियां भी तंदुरुस्त रहती हैं।

हरी पत्तेदार सब्जियां

अगर आज किसी भी बड़े बुजुर्ग से पूछेंगे कि सेहतमंद रहने के लिए कौन सी सब्जी सबसे ज्यादा फायदेमंद है। यही नहीं बल्कि विज्ञान और आयुर्वेद भी हरी पत्तेदार सब्जी की ही पैरवी करते हुए दिखाई देंगे। पर अगर आपको थायराइड से जुड़ी कोई समस्या है तो आपके लिए हरी पत्तेदार सब्जियों में भी वह अधिक फायदेमंद होंगी, जो ब्रैसिसेकी के परिवार से आती है, जैसे ब्रोकोली, ब्रसेल्स स्प्राउट्स, बोक चोय, काले, फूलगोभी, शलजम आदि। आपको बता दें कि यही सब्जियां है जो आयोडीन का उपयोग शरीर में सुचारू ढंग से चला सकती हैं।

करें इन मसालों का सेवन

भारतीय रसोई के भीतर सदियों से ढेरों मसालों को उपयोग खाने के स्वाद को बढ़ाने के लिए किया जाता है। वहीं आयुर्वेद के नजरिए से शामिल किए जाने वाले यह मसाले पोषक तत्वों का खजाना होते हैं, जो कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अंत कर सकते है। वहीं ऐसा ही कुछ अब विज्ञान भी मानने लगा है। अगर आपको थायराइड से जुड़ी दिक्कतों से पार पाना है तो आप अदरक, हल्दी, काली मिर्च, लौंग और मिंट का सेवन कर सकते हैं। इन मसालों के अंदर कई एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं जो आपकी थायराइड की समस्या और उसके लक्षणों को कम कर सकते हैं।

क्या ना खाएं

ऐसा कहा जाता है जिस तरह एक सही डाइट आपकी समस्याओं को हर लेती है। उसी तरह कुछ गलत चीजें आपकी छोटी मोटी दिक्कतों को बड़ी समस्याओं में तब्दील कर देती हैं। इसलिए जितना जरूरी यह है कि आपको क्या खाना चाहिए, उससे कहीं ज्यादा जरूरी है कि आपको क्या नहीं खाना चाहिए। आइए जानते हैं ऐसी ही कुछ चीजों के बारे में जो आपको थायराइड की समस्या के दौरान बिल्कुल भी नहीं खानी चाहिए।

आयोडीन युक्त पदार्थ

अगर आप थायराइड से संबंधित समस्या से लड़ रहे हैं तो ऐसे में जरूरी है कि आप आयोडीन युक्त खाद्य सामग्री का सेवन कम से कम करें या बिल्कुल भी ना करें। क्योंकि अगर आप आयोडीन युक्त पदार्थों का सेवन करते हैं तो इससे ग्रेव्स डिजीज नाम की एक ऑटो इम्यून स्थिति पैदा हो जाती है। इसलिए आयोडीन युक्त पदार्थ का सेवन नहीं करना चाहिए, जैसे दूध, पनीर, एग योल्क और मक्खन आदि।

ग्लूटेन युक्त सामग्री

थायराइड की समस्या से परेशान व्यक्ति को ग्लूटेन युक्त खाद्य सामग्री का सेवन नहीं करना चाहिए। दरअसल इसकी वजह से शरीर में रोगी को सूजन और एलर्जी की समस्या हो सकती है। आमतौर पर घरों के अंदर इस्तेमाल किया जाने वाला गेहू माल्ट और खमीर के अंदर ग्लूटे होता है। इसलिए इस तरह के पदार्थों से दूरी बनाकर रखें।

सोया

सोया उत्पाद का सेवन भी थायराइड की स्थिति में नहीं करना चाहिए। हालांकि इसके अंदर आयोडीन नहीं होता लेकिन हाल ही में टोफू को लेकर कई अध्ययन हो चुके हैं। यह अध्ययन बताते हैं कि सोया थायराइड की स्थिति को बिगाड़ सकता है। इसलिए इसके सेवन से पूरी तरह बचें।

कैफीनयुक्त पेय पदार्थ

आमतौर पर घरों या दफ्तरों में लोग चाय, कॉफी या चॉकलेट का सेवन करते हैं, जिनमें कैफीन होता है। इनके सेवन से घबराहट, चिड़चिड़ापन, और हार्ट रेट बढ़ सकता है। जो हाइपरथायरायडिज्म की स्थिति के लक्षणों को बढ़ाने का कार्य कर सकता है। अगर आपको यह समस्या है और आप सुबह की शुरुआत में ही चाय या कॉफी का सेवन करते हैं तो आप इसकी जगह हर्बल चाय, पानी या सेब के सिरके का पानी में मिलाकर सेवन कर सकते हैं।

खाली पेट खट्टे फलों के सेवन से हो सकते हैं नुकसान

सुबह का नाश्ता हम सभी के लिए जरूरी है और ब्रेकफास्ट में हम सभी का खान-पान अलग वैरायटी का होता है। जैसे किसी को सुबह के नाश्ते में पोहा और उपमा खाना पसंद है तो कोई भीगे चने या फिर फलों का सेवन करता है। नाश्ते की तस्वीरों में संतरे का रस, क्रोइसैन और ब्रेड दिखने में बहुत आकर्षक लग सकते है, लेकिन क्या वास्तव में ऐसी चीजें सुबह खाली पेट खाने से हमारी सेहत को लाभ मिलते है? चूंकि खट्टे फलों में एसिड पाया जाता है, जो हमारे एंगर यानी गुस्से का कारण हो सकता है। इसी तरह, खमीर युक्त ब्रेड भी पेट की सेहत को प्रभावित कर सकती है, जो भविष्य में गैस्ट्रिक की समस्या का कारण बन सकती है। इसलिए यहां हम कुछ ऐसे फूड आइटम्स के बारे में आपको जानकारी दे रहे है जिनके खाली पेट सेवन करने से आपको कई स्वास्थ्य लाभ मिलते है।

पपीता

मल त्याग को कंट्रोल करने के लिए पपीता का सेवन सही विकल्प है। खाली पेट खाने के लिए पपीपा एक सुपरफूड है। सबसे दिलचस्प बात ये है कि पपीता 12 माह यानी पूरे साल बाजार में मिलता है, इसलिए आप हमेशा के लिए इसे अपने सुबह के नाश्ते में शामिल कर सकते है। ये फल न केवल शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर करने में मदद करता है बल्कि खराब कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता और दिल की बीमारियों के जोखिम से बचाव करता है।

तरबूज

सुबह के नाश्ते में खट्टे फलों को छोड़ आप एप्पल जैसे दूसरे फलों को शामिल कर सकते हैं और तरबूज इस सूची में सबसे ऊपर है। 90% पानी से बना यह फल शरीर को हाइड्रेशन की एक बड़ी खुराक प्रदान करता है। यह न केवल शुगर क्रेविंग को रोकता है बल्कि इसे खाने से हम अतिरिक्त कैलोरी भी नहीं लेते। तरबूज इलेक्ट्रोलाइट्स से भरपूर होता है और इसमें अधिक मात्रा में लाइकोपीन यौगिक भी होता है जो हृदय व आंखों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

नट्स

हेल्दी गट यानी स्वस्थ्य आंत के लिए नाश्ते में मुट्ठी भर नट्स खाना बहुत जरूरी है। यह न केवल पाचन में सुधार करते है बल्कि आपके पेट के पीएच लेवल को भी सामान्य करते हैं। आप अपनी डेली डाइट में किशमिश, बादाम और पिस्ता को शामिल कर सकते हैं। हालांकि, आपको इन्हें कम मात्रा में ही खाए, क्योंकि इसको अधिक खाने से पिंपल्स और वजन बढ़ सकता है।

पोरिज

यदि आप कम कैलोरी और अधिक मात्रा के पोषक तत्वों वाला नाश्ता खाना पसंद करते हैं तो पोरिज एक बढ़िया विकल्प है। खासकर दलिया से बना पोरिज सुबह के नाश्ते का सुपरफूड है, जो स्वाद में भी लाजवाब है और सेहत के लिए हेल्दी भी है। खाली पेट पॉरिज खाने से भी शरीर के टॉक्सिन्स बाहर निकलते हैं और आंतों की सेहत भी हेल्दी रहती है। दलिया खाने से आपका पेट लंबे समय तक भरा रहता है जिससे आप अतिरिक्त खाने से भी बचते हैं।

आपका हो गया हार्ट फेल, शरीर देता है 5 लक्षण, अटैक आने से पहले करें ये काम

अगर आपको हमेशा सांस फूलना, लगातार थकान, पैरों या टखनों में सूजन, धड़कन का तेज या अनियमित होना और रात में खांसी या घरघराहट जैसे लक्षण महसूस होते है, तो यह संकेत है कि आप हार्ट फेल हो गया है या होने वाला है। हार्ट फेलियर एक ऐसी कंडीशन है जो किसी को भी हो सकती है। इसका मतलब यह नहीं कि आपका दिल रुक गया है, बल्कि इसका अर्थ है कि आपका दिल शरीर की जरूरतों के अनुसार पर्याप्त रूप से खून नहीं पंप कर पा रहा है। यह समस्या उतनी आम है, जितनी लोग सोचते भी नहीं। हर 5 में से 1 व्यक्ति को अपने जीवन में कभी न कभी हार्ट फेलियर हो सकता है, हार्ट फेलियर कुछ कैंसर जितना ही गंभीर हो सकता है। अगर समय पर इलाज न मिले तो हर 2 में से 1 व्यक्ति डायग्नोसिस के 5 साल से ज्यादा नहीं जी पाता।

हार्ट फेलियर से कैसे बचें?

डॉक्टर के अनुसार, अच्छी बात यह है कि सही इलाज, दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से हार्ट फेलियर के मरीज लंबे और बेहतर जीवन जी सकते है। चलिए समझाते है कि आप इस कंडीशन को कैसे समझ सकते है और कैसे

हार्ट फेलियर क्या है?

डॉ. के अनुसार, हार्ट फेलियर का मतलब है कि दिल उतनी ताकत से खून पंप नहीं कर पा रहा जितनी शरीर को जरूरत है। इसका मतलब दिल का रुक जाना नहीं होता, बल्कि यह है कि दिल कमजोर पड गया है।

हार्ट फेलियर के लक्षण

अगर आपको रोजमर्रा के काम करते समय या लेटते वक्त सांस फूलने लगे, लगातार थकान महसूस हो, पैरों, टखनों या पांवों में सूजन दिखाई दे, धड़कन तेज या अनियमित हो जाए और खांसी या सांस में घरघराहट बनी रहे, तो ये सभी संकेत दिल की कमजोरी यानी हार्ट फेलियर के शुरुआती लक्षण हो सकते है। ऐसे लक्षणों को हल्के में न लें और तुरंत डॉक्टर से जांच करवाएं।

किन लोगों को खतरा है?

हार्ट फेलियर का खतरा किसी को भी हो सकता है, लेकिन कुछ लोगों में यह जोखिम अधिक होता है। जिन लोगों को हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग या ब्लॉकेज की समस्या है, डायबिटीज के मरीज है, मोटापे से परेशान है, धूम्रपान करते है या ज्यादा मात्रा में शराब पीते है, उन्हें दिल कमजोर होने का खतरा दूसरों की तुलना में कहीं ज्यादा रहता है। हार्ट फेलियर से बचाव के लिए जीवनशैली में कुछ सरल बदलाव करना बहुत जरूरी है। वजन को कंट्रोल रखें, रोजाना नियमित व्यायाम करें, कम नमक वाला बैलेंस डाइट लें,स्मोकिंग और शराब से पूरी तरह दूरी बनाए और तनाव को नियंत्रण में रखें। ये आदतें दिल को मजबूत बनाती है और हार्ट फेलियर के खतरे को काफी हद तक कम कर सकती है।

डॉक्टर को कब दिखाएं?

अगर आपको बिना वजह थकान महसूस हो रही है, सांस फूल रही है या पैरों में सूजन दिख रही है, तो इसे हल्के में न लें और तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

कलिंग समाचार

संपादकीय

रविवार 25 जनवरी 2026

भाजपा–चीन भाई–भाई

देश को धर्मांधता और राष्ट्रवाद के जहर में डुबोकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पतंगबाजी और डमरू बजा रहे हैं। जनता को फिर भी समझ नहीं आ रहा कि मदारी जैसे खेल दिखाकर दर्शकों को असलियत से भटका देता है, वही काम भाजपा सरकार कर रही है। मदारी तो फिर भी अपनी रोजी–रोटी के लिए यह काम करता है, उसमें पेशे के प्रति ईमानदारी होती है, जो भाजपा की मौजूदा सरकार में सिरे से नदारद दिख रही है। छह साल पहले जून 2020 में गलवान घाटी पर चीन ने अतिक्रमण की कोशिश की थी और इसमें सीमा पर तैनात भारतीय सैनिकों से झड़प हुई, जिसमें कम से कम 20 जवान शहीद हुए थे। उस समय नरेन्द्र मोदी से बिहार चुनाव में बिहार रेजीमेंट के शहीद जवानों के नाम को भुनाया था। आचार संहिता कहती है कि सेना के नाम पर वोट नहीं मांगे जा सकते, लेकिन नरेन्द्र मोदी कहां आचार–विचार की परवाह करते हैं। उन्हें केवल सत्ता और मुनाफा नज़र आता है। इसलिए अब जिस चीन को दुश्मन बताकर उसका आर्थिक बहिष्कार करने का ऐलान किया, लाल आंखें दिखाकर डराने का वादा किया, अब उसी चीन की सत्तारुढ़ क युनिस्ट पार्टी से भाजपा और संघ की बाकायदा बैठक हो रही है। इनकी निर्लज्जता और दुस्साहस अब इतना अधिक हो चुका है कि इसकी जानकारी सोशल मीडिया पर दी जा रही है। भाजपा जानती है कि देश का बिका हुआ मीडिया और चापलूसी में लगे पत्रकार इस बारे में कोई आलोचना नहीं करेंगे। बल्कि अब देश को बताया जाएगा कि चीन से नजदीकी बढ़ाकर प्रधानमंत्री मोदी ने कैसे मास्टर स्ट्रोक चला है। मोदी और जिनपिंग का प्लान, ट्रंप होगा परेशान, जैसी हेडलाइन्स देखने मिलें तो आश्चर्य नहीं। पाठकों को बता दें कि भाजपा के विदेश मामलों के विभाग के प्रभारी विजय चौथाई वाले ने एक पोस्ट में जानकारी दी कि सीपीसी के अंतरराष्ट्रीय विभाग (आईडीसीपीसी) की उपमंत्री सुन हैयान के नेतृत्व में सीपीसी प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली में भाजपा मु यालय का दौरा किया। इस दौरान भाजपा प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व पार्टी के महासचिव अरुण सिंह ने किया। बैठक में भारत में चीनी राजदूत जू फीहोंग भी शामिल हुए। बैठक के दौरान भाजपा और सीपीसी के बीच संचार और संवाद को बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा हुई। अब ये सवाल भाजपा से पूछा जा सकता है कि आखिर वह किस हैसियत से उस देश की सत्तारुढ़ पार्टी से संचार और संवाद बढ़ाना चाहती है, जो बार–बार हमारी सीमाओं में अतिक्रमण करता है, हमारे इलाकों पर अपना दावा ठोंकता है, और जिसने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान को मदद पहुंचाई? क्या प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भाजपा और चीन की पार्टी के बीच हुई बैठक से नावाकिफ थे? अगर नहीं, तो पहले से इस बारे में उन्होंने देश को सूचित क्यों नहीं किया। वैसे प्रधानमंत्री मोदी से अब किसी भी किस्म की ईमानदार पहल की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। क्योंकि गलवान के बाद उन्होंने कहा था कि न कोई घुसा था, न हमारी जमीन गई। जबकि तथ्य है कि चीनी सेना ने हमारी जमीन का अतिक्रमण किया है और अब उसे वापस लेने की मांग शायद भारत सरकार ने छोड़ दी है। देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल हजारों साल पहले के हमलों का बदला लेने के लिए आज के नौजवानों को उकसा रहे हैं, लेकिन अपनी जि मेदारी पूरी नहीं कर रहे। पहले कंधार तक वो आतंकवादियों को छोड़कर आए थे, और अब गलवान, पुलवामा, पहलगाम जैसे बड़े हमलों के बावजूद उनकी कोई पु ता रणनीति सामने नहीं आ रही है, जिससे पता चले कि हां वो वाकई धुरंधर है। खैर, भाजपा और चीन अब भाई–भाई हैं, ये बात तो भाजपा ने ही साबित कर दी है। इधर चीन ने अपने अतिक्रमण वाले चरित्र को बरकरार रखते हुए ज मू–कश्मीर की शक्सगाम घाटी पर अपने क्षेत्रीय दावे को दोहराया है। चीन के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि यह क्षेत्र चीन का हिस्सा है और 1960 के दशक में पाकिस्तान के साथ सीमा समझौते के तहत यह वैध है। उन्होंने भारत की आपत्तियों को खारिज करते हुए कहा कि चीन और पाकिस्तान को संप्रभु देशों के रूप में सीमा निर्धारण का अधिकार है।

ममदानी की जीत में भारत के लिए संदेश

डॉ. मलय मिश्रा

अपनी वैचारिक घोषणाओं में ममदानी एक उदार समाजवादी मोर्चे के नजदीक हैं। यह एक बहुसं यकवादी राज्य को निरंकुशता की ओर खिसकने से रोकने के खिलाफ़ एक बहुत ही जरूरी रामबाण उपाय है जिसने पिछले एक दशक में लोकतांत्रिक भारत को बदल दिया है। शक्तिशाली और विरोधी वैचारिक गुटों के बीच उभरी दुनिया में अहिंसक स्वतंत्रता संग्राम से स्थापित अपनी धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक साख वाले भारत को एक ममदानी की जरूरत है।

जोहरान ममदानी ने मैनहट्टन के एक बंद पड़े सबवे में संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण शहर न्यूयॉर्क के मेयर के रूप में पद की शपथ ली। सबवे में शपथ लेना एक तरह से शहर के श्रमिकों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के साथ ममदानी के संबंधों का प्रतीक है। उन्हें डेमोक्रेटिक सीनेटर बर्नी सैंडर्स ने शपथ दिलाई जो अमेरिकी राजनीति में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति और लोकतांत्रिक समाजवाद के पथप्रदर्शक हैं। उनके साथ कांग्रेस सदस्य एलेजेंड्रिया कोर्टेज भी थीं।

भारतीय मीडिया में उनके ऐतिहासिक शपथ ग्रहण के बारे में शायद ही कोई कवरेज था और न ही इस बात का जिक्र था कि ममदानी के चुनाव का अमेरिकी राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ेगा। 34 वर्षीय राजनेता ने बिग एप्पल (न्यूयार्क शहर का उपनाम) का प्रभार संभालने में कई वर्जनाओं को तोड़ दिया जो कि अभिजात वर्ग, अमीरों व अरबपतियों और अमेरिकी यहूदियों का गढ़ है। हालांकि ममदानी और उनकी जीत का भारत में ज्यादा जिक्र नहीं हो रहा है। अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी और दो बार के डेमोक्रेट गवर्नर एंड्रयू कुओमो को 50 प्रतिशत से अधिक वोटों से हराकर शानदार जीत हासिल करने के बावजूद सरकार ने अपने मीडिया संचालकों के माध्यम से ममदानी को गायब करने की कोशिश की। नस्ल, धर्म, जातीयता व आर्थिक पृष्ठभूमि से ऊपर उठकर और बड़े पैमाने पर आप्रवासी टैग वाले दस लाख से अधिक न्यूयॉर्क वासियों ने दुनिया भर में हलचल पैदा करने वाले एक अभूतपूर्व चुनाव में उनके लिए मतदान किया था। यह केवल उनका गृह देश भारत है जिसने अपने 34 वर्षीय बेटे को उसकी अभूतपूर्व जीत पर सलाम नहीं किया जो एक असेंबली सदस्य से अमेरिका के सबसे अमीर शहर का नेतृत्व करने के लिए उभरा है।

ममदानी के पास ऐसी कई बातें हैं जो पहली बार हुई हैं। मसलन, एशियाई व अफ्रीकी मूल के पहले अमेरिकी, पहले मुस्लिम और न्यूयॉर्क के सबसे कम उम्र के मेयर। वे %सलाम बॉ बे, मानसून वेडिंग और नेमसेक जैसी फिल्मों के साथ विश्व स्तर पर प्रशंसित फिल्म निर्माता मीरा नायर और कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर महमूद ममदानी के पुत्र हैं। महमूद ममदानी की किताब गुड मुस्लिम बैड मुस्लिम ह तों तक न्यूयॉर्क टाइ स की बेस्टसेलर बनी रही जो 9/11 के हमले के तुरंत बाद प्रकाशित हुई थी।

जोहरान ने कभी भी कुलीन विरासत में पैदा होने का आदर्श नहीं माना है। यह देखते हुए कि न्यूयॉर्क अपनी धरती पर 150 से अधिक राष्ट्रीयताओं की मेजबानी करता है, उन्होंने अप्रवासियों के मुद्दे को उठाया है। धर्मनिरपेक्ष और उदारवादी विचारधारा के ममदानी ने खुद को हर न्यू यॉर्कर की दुर्दशा की परवाह करने वाला दिखाया है। यह देखते हुए कि अमेरिका–इज़रायल पब्लिक अफेयर्स कमेटी (एआईपीएसी) अमेरिका का सबसे बड़ा इज़रायल समर्थक लॉबिंग समूह और न्यूयॉर्क यहूदी फाऊंडेशन ने एंड्रयू कु ओमो के समर्थन में सक्रिय भूमिका निभाई थी, ममदानी ने फिलिस्तीनियों के नरसंहार में नेतन्याहू की भूमिका की आलोचना करने के बाद यहूदी विरोधी भावना के आरोपों से खुद को जल्दी ही दूर कर लिया है। हालांकि चुनाव परिणामों में यहूदी वोटों का विभाजन भी देखा गया, युवा पीढ़ी ममदानी के पक्ष में थी जबकि पुराने, हसीदिक और धनी यहूदी एंड्रयू कुओमो के लिए सामूहिक रूप से मतदान कर रहे थे।

वैसे न्यूयार्क के मेयर ने एक शिष्टाचार बैठक में व्हाइट हाउस में उपस्थित होकर पांसा पलट दिया और सभी न्यूयॉर्कवासियों के हितों को हासिल करने के अपने प्राथमिक उद्देश्य तथा मु त परिवहन और बच्चों की देखभाल, किफायती आवास तथा सरकार द्वारा संचालित किराने की दुकानें प्रदान करने पर जोर दिया जैसा कि उन्होंने अपने चुनाव अभियान में वादा किया था। आश्चर्यजनक रूप से और शायद जनता के मूड को देखते हुए ट्र प ने पाला बदल लिया तथा ममदानी को सभी प्रकार के समर्थन का आश्वासन दिया।

राष्ट्रपति ट्र प द्वारा ममदानी की सार्वजनिक तौर पर की गई तीव्र निंदा, संघीय धन में कटौती करने की धमकी और खुलेतौर पर डेमोक्रेट प्रतिद्वंद्वी कुओमो का समर्थन करने के बावजूद ममदानी की बढ़ती लोकप्रियता में शायद ही कोई सेंध लगी।

ममदानी को मार्क्सवादी और राष्ट्र–विरोधी बताते हुए ट्र प ने ममदानी के राजनीतिक कैरियर को शुरू होने से पहले ही खत्म करने की कोशिश की। वैसे न्यूयार्क के मेयर ने एक शिष्टाचार बैठक में व्हाइट हाउस में उपस्थित होकर पांसा पलट दिया और सभी न्यूयॉर्कवासियों के हितों को हासिल करने के अपने प्राथमिक उद्देश्य तथा मु त परिवहन और बच्चों की देखभाल, किफायती आवास तथा सरकार द्वारा संचालित किराने की दुकानें प्रदान करने पर जोर दिया जैसा कि उन्होंने अपने चुनाव अभियान में वादा किया था। आश्चर्यजनक रूप से और शायद जनता के मूड को देखते हुए ट्र प ने पाला बदल लिया तथा ममदानी को सभी प्रकार के समर्थन का आश्वासन दिया। इस घटना ने वैचारिक रूप से विभाजित दक्षिणपंथी और वामपंथी राजनेताओं के विरोधाभासी चित्रों को दिखाया। एक, जो मतलबी दिमाग, प्रतिशोधी, अप्रत्याशित है और दूसरा, जो चुनौती देने वाला, प्रतिबद्ध तथा निडर है।

दक्षिण अमेरिका में मौजूदा उथल–पुथल में ट्र प ने सभी अंतरराष्ट्रीय मानदंडों की अवहेलना की और एक संप्रभु देश वेनेजुएला के निर्वाचित राष्ट्रपति और उनकी पत्नी पर %कब्जा% कर लिया। अमेरिकी प्रणाली सचमुच ढह गई। मीडिया ने घातक चुप्पी साध ली और सत्ता के इस घोर दुरुपयोग के खिलाफ कांग्रेस एवं सुप्रीम कोर्ट बेआवाज़ हो गया। ऐसी स्थिति में आक्रामकता के इस निर्लज्ज कृत्य को %युद्ध की घोषणा% बताते हुए निंदा करने के लिए ममदानी खड़े हुए।

अपने मुखर विचारों के लिए परिचित ममदानी ने खुद को जन–समर्थक विचारधारा के पक्ष में स्थापित किया है। ममदानी ने नरेंद्र मोदी की आलोचना करते हुए उन्हें फासीवादी कहा है। फिलिस्तीनियों की अपनी धरती पर एक शांतिपूर्ण मातृभूमि के अधिकार का आह्वान करते हुए ममदानी ने इज़रायली पीएम नेतन्याहू को न्यूयॉर्क में कभी भी न आने की चेतावनी दी क्योंकि वे नेतन्याहू को हजारों असहाय फिलिस्तीनी महिलाओं, बच्चों, बूढ़ों और बीमारों के नरसंहार के लिए मानवता के खिलाफ अपराध% करने के लिए गिर तार करेंगे। ममदानी के पिता कच्छी गुजराती हैं जबकि मां हिंदू पंजाबी हैं। जोहरान एक सीरियाई मुस्लिम से विवाहित हैं।

इस प्रकार वे विश्व बंधुत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं जो उनके स्पष्ट उदारवादी विचारों में प्रतिध्वनित होता है। इसके बावजूद उन्होंने अपने मुस्लिम वंश की पुष्टि करने के लिए ऐतिहासिक पुराने कुरान पर हाथ रखकर शपथ ली थी। ममदानी ने न्यूयॉर्क के सभी पांच नगरों में बड़ी सं या में मुसलमानों से मुलाकात की थी और उनके लगभग सर्वसमत वोट हासिल किए थे। अपनी वैचारिक घोषणाओं में ममदानी एक उदार समाजवादी मोर्चे के नजदीक हैं।

यह एक बहुसं यकवादी राज्य को निरंकुशता की ओर खिसकने से रोकने के खिलाफ़ एक बहुत ही जरूरी रामबाण उपाय है जिसने पिछले एक दशक में लोकतांत्रिक भारत को बदल दिया है। शक्तिशाली और विरोधी वैचारिक गुटों के बीच उभरी दुनिया में अहिंसक स्वतंत्रता संग्राम से स्थापित अपनी धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक साख वाले भारत को एक ममदानी की जरूरत है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बिना किसी कॉर्पोरेट या राजनीतिक समर्थन पर निर्भर रहे बल्कि सिर्फ आम लोगों के समर्थन पर अपने सभी विरोधियों को हराकर अमेरिकियों की नई पीढ़ी के सबसे युवा नेता के रूप में उभरे ममदानी ने नेहरू के प्रतिष्ठित ट्रिस्ट विद डेस्टिनी भाषण को उद्धृत करने का फैसला किया।

राजनीतिक विश्लेषक सुनील खिलनानी ने द आइडिया ऑफ इंडिया में लिखा है- आधुनिक भारतीय राजनीति अपनी प्रतिमा के लिए राष्ट्रवादी शीर्षस्थ नेताओं की छवि को लूटना जारी रखती है जबकि अपने व्यावहारिक संघर्षों में यह राष्ट्रवादी दुनिया और अपने विशिष्ट स्वभाव से दूर और दूर जाती है। पुराने तर्कों और लड़ाइयों की आज वर्तमान पीढ़ी के नए अर्थों और इच्छाओं के साथ पुनरावृत्ति की जाती है- अंबेडकर एक बार फिर गांधी के खिलाफ खड़ा हो गया है, पटेल को नेहरू के खिलाफ लड़ाई में लाया गया है।

यहां तक कि जब वे विभाजित होते हैं तो भी ये संघर्ष स्वयं एक साझा इतिहास, एक सांझी भारतीय अतीत की उपस्थिति की गवाही देते हैं.., ये संघर्ष 1947 से भारत के इतिहास की पहचान हैं; और भारत क्या है, इसके विविध विचारों को लगातार शामिल करने की अपनी क्षमता में यह इतिहास अपने आप में भारतीय विचार को व्यक्त करता है।% भारत की ताकत इसकी सदियों पुरानी विविधता %वसुधैव कुटु बकम% (जहां दुनिया को एक परिवार के रूप में देखा जाता है) में निहित है और एक मोनोक्रोमैटिक ब्रश के साथ पेंट करने का कोई भी प्रयास वास्तविक भारतीय कैनवास को जीवंत नहीं कर सकता। जोहरान ममदानी के बहुलवादी, उदार और अमूल्य विचार एक नए भारत के मूल के साथ प्रतिध्वनित होते हैं और उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में खड़ा करते हैं जिसे दुलारा जाना चाहिए।

अजीत डोभाल की बदला लेने की बात में अन्तर्निहित खतरनाक परिणाम का भय

डॉ. अरुण मित्रा

हम अच्छी तरह जानते हैं कि हिंसा के कई नतीजे होते हैं। इसका असर शारीरिक घटनाओं के होने से पहले ही शुरू हो जाता है, जो मानसिक स्वास्थ्य संकट के रूप में सामने आता है। इंसानी सेहत पर शारीरिक असर जल्द ही चोट, विकलांगता और मौत के रूप में देखा जा सकता है। आर्थिक गतिविधि और शिक्षा कार्यक्रम भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं। उलटी–सीधी बातों से भरे एक भाषण में, भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने, एक बारीक लेकिन साफ तरीके से, युवाओं से बदला लेने का विचार अपनाने को कहा है। 10 जनवरी 2026 को विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग में लगभग 3,000 युवाओं की एक सभा को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा कि हालांकि बदला एक अच्छा शब्द नहीं है, फिर भी यह एक बहुत बड़ी ताकत हो सकता है। उन्होंने दर्शकों से इतिहास का बदला लेने और देश को एक बार फिर महानता की ओर ले जाने का आग्रह किया- न केवल सीमा सुरक्षा के मामले में, बल्कि अर्थव्यवस्था, सामाजिक विकास और हर दूसरे क्षेत्र में भी।

सोमनाथ मंदिर का चुपचाप ज़िक्र करते हुए, उन्होंने आगे कहा कि भारत ने पहले बहुत कुछ झेला है और उसे हमलों और गुलामी के दर्दनाक इतिहास का बदला लेना चाहिए। उन्होंने मज़बूत नेतृत्व की ज़रूरत पर भी ज़ोर दिया, और खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जिक्र किया। अपनी बात को मज़बूत करने के लिए, उन्होंने नेपोलियन को उद्धृत किया- मैं एक भेड़ के नेतृत्व में 1,000 शेरों से नहीं डरता, लेकिन मैं एक शेर के नेतृत्व में 1,000 भेड़ों से डरता हूं।% इसका मतलब साफ़ था—नरेंद्र मोदी को 142 करोड़ लोगों के देश का नेतृत्व करने वाले शेर के तौर पर पेश करना।

उन्होंने यह भी कहा कि हमने कभी दूसरों पर हमला नहीं किया, यह पूरी तरह से भूलकर कि सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध में कितनी बड़ी सं या में लोगों को मारा था। उन्होंने यह भी नज़रअंदाज़ किया कि कैसे बौद्ध और जैन मंदिरों को तोड़ दिया गया और उन पर हिंदू मंदिर बनाए गए। इसके अलावा, जाति के नाम पर जुल्म दुनिया में कहीं और अनजान है। एक सोची–समझी चाल में, श्री डोभाल ने महात्मा गांधी, भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस के नाम लिए। फिर भी, अपने पूरे भाषण में, वह सबको साथ लेकर चलने, न्याय, पिछड़े तबकों के लिए बराबरी, या पुरुष–स्त्री बराबरी के लिए उनके साझी प्रतिबद्धता के बारे में एक भी शब्द नहीं बोल पाए।

हज़ार साल पहले हुई गलतियों का बदला लेने पर उनका बार–बार ज़ोर देना, सीधे तौर पर मध्ययुगीन काल के भारत के मुस्लिम हमलावरों की ओर इशारा करता है। यह कोई इत्तफ़ाक नहीं है कि अगले ही दिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमनाथ मंदिर में ऐसा ही भाषण दिया, जिसमें दावा किया गया कि मंदिर की शान अब वापस आ गई है—इस ऐतिहासिक सच्चाई के बावजूद कि इसे 1951 में पूरी तरह से फिर से बनाया गया था। ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री ने मंदिर की प्रतीकात्मक जगह तो चुनी, लेकिन युवाओं को सीधे संबोधित करने और बदला लेने का विचार पैदा करने का काम बड़ी चतुराई से अजीत डोभाल को सौंप दिया गया।

खास बात यह है कि श्री डोभाल यह बताने में नाकाम रहे कि बदला कैसे लिया जाए, या किसके खिलाफ लिया जाए, यह देखते हुए कि महमूद ग़ज़नी बहुत पहले मर चुका है। उन्होंने इस ऐतिहासिक सच्चाई को भी नज़रअंदाज़ कर दिया कि ग़ज़नी के अभियानों को उस समय के कई हिंदू राजाओं के समर्थन और सहयोग से मदद मिली थी—जिनके सहयोग के बिना ज़रूरी आपूर्ति की कमी के कारण उनकी सेना बच नहीं सकती थी। एक खतरनाक एजेंडा सामने लाने के साथ, आरएसएस ने अब पूरे देश में हिंदू स मेलन करने की योजना बनायी है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत हिंदू राष्ट्र की बात करते समय कोई लाग–लपेट नहीं करते। अजीत डोभाल के भाषण को आरएसएस और भाजपा सरकार के थिंक टैंक ने अच्छी तरह से मंज़ूरी दी है।

सोमनाथ मंदिर से जुड़ी घटनाओं के हज़ार साल बाद पैदा हुई पीढ़ियों से बदला लेना, सांप्रदायिक दंगे करवाना और देश को अराजकता की ओर धकेलना। अब तक, हम अच्छी तरह जानते हैं कि हिंसा के कई नतीजे होते हैं। इसका असर शारीरिक घटनाओं के होने से पहले ही शुरू हो जाता है, जो मानसिक स्वास्थ्य संकट के रूप में सामने आता है। इंसानी सेहत पर शारीरिक असर जल्द ही चोट, विकलांगता और मौत के रूप में देखा जा सकता है। आर्थिक गतिविधि और शिक्षा कार्यक्रम भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं। इससे, बदले में, पोषण का संकट और बीमारियों में बढ़ोतरी होती है। समाज के अंदर अविश्वास संकट को और बढ़ाता है। अंदरूनी झगड़े देशों को कमज़ोर करते हैं और बाहरी तनाव और यहां तक कि युद्धों में भी बदल सकते हैं। युद्ध सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है।

इसका अवसंरचना और पर्यावरण पर बहुत बुरा असर पड़ता है और यह कई बड़ी बीमारियों को मिलाकर होने वाली मौतों और विकलांगता से भी ज़्यादा लोगों को मारता है। युद्ध तो परिवारों, समुदायों और कभी–कभी पूरी संस्कृतियों को खत्म कर देता है, जबकि पहले से उपलब्ध कम संसाधनों को स्वास्थ्य की देखभाल और ज़रूरी सामाजिक ज़रूरतों से दूर कर देता है।

सदस्यता बॉलीवुड समाचार पत्रिका सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन ब्रेकिंग न्यूज़ युवा विकास कार्यक्रम इसलिए यह ज़रूरी है कि सांप्रदायिक हिंसा और बाहरी झगड़ों से हर कीमत पर बचा जाए। यह सिफ़ लगातार सार्वजनिक शिक्षा और शांति, अहिंसा, सामाजिक मेलजोल, पुरुष–स्त्री समानता और न्याय पर आधारित मज़बूत कथानकों के निर्माण से ही हासिल किया जा सकता है। सत्ता में बैठे लोगों को समाज को आगे बढ़ाना चाहिए और बदला और हिंसा का उपदेश देकर नहीं,बल्कि सबको साथ लेकर चलने वाले विकास के ज़रिए देश को महान बनाना चाहिए। आज दुनिया 1000 साल पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा एक–दूसरे पर निर्भर है। अंदरूनी उथल–पुथल का अन्तरराष्ट्रीय संबंधों और आर्थिक विकास पर बुरा असर पड़ सकता है। ऐसी स्थितियों में बाहरी ताकतों के सक्रिय होने की संभावना हमेशा ज़्यादा रहती है। एक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक समाजवादी गणराज्य के तौर पर भारत के विचार को हमें एकजुट होकर लगातार कोशिशों से बचाना और बढ़ावा देना होगा।

विविध समाचार

चंडीगढ़ का सीरियल किलर दोषी करार, एमबीए छात्रा सहित 3 महिलाओं का किया मर्डर, 12 साल बचता रहा

चंडीगढ २४/०१ (संवाददाता):चंडीगढ़ में 15 साल पहले एमबीए छात्रा की रेप के बाद हुए मर्डर केस में कोर्ट ने सीरियल किलर मोनू को दोषी करार दे दिया है। अब उसे कल सजा सुनाई जाएगी। जिस वक्त उसे दोषी करार दिया गया, कोर्ट में छात्रा के माता–पिता भी मौजूद थे। उन्होंने कोर्ट के फैसले पर संतुष्टि जताई लेकिन सजा का इंतजार करने की बात कही है। यह मामला 2010 का है।

जब छात्रा के कत्ल के 12 साल तक आरोपी का पता ही नहीं चल सका था। पुलिस ने भी अनट्रेस केस की रिपोर्ट दाखिल कर दी थी और परिवार ने भी न्याय की आस छोड़ दी थी। मगर, साल 2022 में चंडीगढ़ में ही हुई एक महिला की हत्या की जांच में पुलिस के हाथ छात्रा के मामले का पहला सुराग लगा।

पुलिस की ओर से कराए गए 100 से ज्यादा डीएनए टेस्ट और 800 लोगों से हुई पूछताछ में आरोपी मोनू कुमार निवासी डड्डूमाजरा शाहपुर कॉलोनी, चंडीगढ़ का नाम सामने आया। मगर, दिक्कत ये थी कि वह चंडीगढ़ छोड़कर बिहार जा चुका है और ना तो वह मोबाइल फोन का इस्तेमाल करता था, ना उसके पास आधार कार्ड था और ना ही उसका कोई बैंक अकाउंट। ऐसे में पुलिस लाख कोशिश करने के बावजूद उसे ट्रेस नहीं कर पा रही थी। मगर, साल 2024 में वह चंडीगढ़ लौटा तो मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उसने दोनों महिलाओं की हत्या की बात कबूली। यह भी बताया कि 2008 में हिमाचल प्रदेश के चंबा में एक छोटी सी बच्ची के साथ रेप करने के बाद उसकी हत्या कर दी थी।

एनएचपीसी ने मनाया संविधान दिवस : नए लेबर कोड्स पर जागरूकता सत्र आयोजित, अधिकारियों को पढ़ाए गए नियम

चंडीगढ़ २४/०१ (संवाददाता): एनएचपीसी क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ के कार्मिकों ने कार्यपालक निदेशक श्री आदित्य गौतम के अगुवाई में संविधान दिवस के अवसर पर प्रस्तावना पाठन किया। इस कार्यक्रम के दौरान भारत सरकार द्वारा 21 नवंबर 2025 को लागू की गई श्रम संहिताएं लागू करते हुए कार्य बल के लिए श्रम संहिताएं जागरूकता सत्र का शुभारंभ किया गया, जिसके अंतर्गत श्री एम एम खान, समूह वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन) द्वारा चारों श्रम संहिताओ यथा मजदूरी संहिता 2019, सामाजिक सुरक्षा संहिता 2020, औद्योगिक संबंध संहिता 2020 तथा व्यावसायिक सुरक्षा , स्वास्थ्य एवं कार्य दशाएं संहिता 2020 के विषय पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यपालक निदेशक महोदय ने इस जागरूकता सत्र को सबके लिए लाभकारी तथा ज्ञानवर्धक बताया, उन्होंने प्रतिभागियों को इसके शत प्रतिशत अनुपालन हेतु आवश्यक दिशानिर्देश दिए । इस सत्र में समूह महाप्रबंधक (विधि) श्रीमती रूबी रैना, उप महाप्रबंधक (वित्त) श्री राजेंद्र सिंह रावत एवं उप महाप्रबंधक (सिविल) श्री वीरेंद्र कुमार सहित अन्य अधिकारियो तथा कर्मचारियों ने भी सहभागिता की। सभी उपस्थित कार्मिकों ने इस जागरूकता सत्र को बहुत सराहा तथा इसे सबके लिए लाभप्रद बताया।

पंजाब का मूर्तिकार बना रहा धर्मेंद्र का स्टैच्यू, जानें कितना आएगा खर्च, कितनी होगा लंबाई और चौड़ाई ?

मोगा २४/०१ (संवाददाता): बॉलीवुड के 'ही–मैन' और पंजाब के पुत्र धर्मेंद्र के निधन से जहां पूरी फिल्म इंडस्ट्री और उनके प्रशंसक शोक में डूबे हैं, वहीं उनके गृह राज्य पंजाब में उन्हें एक अनोखे अंदाज में श्रद्धांजलि देने की तैयारी चल रही है। मोगा जिले के गांव मानुके के रहने वाले मशहूर मूर्तिकार इकबाल सिंह गिल ने अपने चहेते सितारे की यादों को हमेशा के लिए सहेजने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने धर्मेंद्र की एक भव्य प्रतिमा तैयार करने का काम शुरू कर दिया है, जो जल्द ही बनकर तैयार हो जाएगी। इकबाल सिंह गिल इस कार्य को अभिनेता के प्रति अपने सम्मान के रूप में देख रहे हैं। मूर्तिकार इकबाल सिंह गिल ने बताया कि वे अपनी कला के जरिये इस दिग्गज अभिनेता को नमन कर रहे हैं और धर्मेंद्र का यह स्टैच्यू लगभग एक सप्ताह के भीतर तैयार कर लिया जाएगा। खास बात यह है कि इस प्रतिमा को बनाने में आने वाला करीब एक लाख रुपये का पूरा खर्च इकबाल सिंह खुद वहन करेंगे। स्टैच्यू की लंबाई और चौड़ाई पूरी तरह से धर्मेंद्र की कद–काठी के हिसाब से ही रखी जा रही है ताकि दर्शकों को अभिनेता की जीवंत छवि का अहसास हो सके। तैयार होने के बाद इस स्टैच्यू को इकबाल अपनी आर्ट गैलरी में स्थापित करेंगे, जो कला प्रेमियों और धर्मेंद्र के फैंस के लिए आकर्षण का केंद्र होगी। इकबाल सिंह का कहना है कि धर्मेंद्र पंजाब की मिट्टी से जुड़े हुए इंसान थे और भले ही आज वे इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन हर पंजाबी के दिल में हमेशा रहेंगे। इकबाल को बचपन से ही मूर्तियां बनाने का शौक था और महज 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी पहली मूर्ति गौतम बुद्ध की बनाई थी। खेती–बाड़ी के साथ–साथ उन्होंने मूर्तिकला को अपना जुनून और पेशा दोनों बनाया है। उनका मानना है कि जो लोग देश का मान बढ़ाते हैं, उन्हें अपनी कला के माध्यम से श्रद्धांजलि देना उनका कर्तव्य है। बॉलीवुड लेजेंड धर्मेंद्र का यह स्टैच्यू उनकी कला को एक नई पहचान देगा। इकबाल सिंह गिल के हुनर की चर्चा दूर–दूर तक है और उनके हाथों से बनीं सैकड़ों मूर्तियां आज देश–विदेश की कई संस्थाओं और स्थानों पर स्थापित हैं। धर्मेंद्र से पहले वे पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, महान एथलीट मिल्खा सिंह, दिवंगत गायक सिद्धू मूसेवाला, कबड्डी खिलाड़ी संदीप नंगल अंबियां, बाबा लाडी शाह और कई शहीद फौजियों की प्रतिमाएं बना चुके हैं। गौरतलब है कि 24 नवंबर को धर्मेंद्र का निधन हो गया था।

जालंधर वेस्ट में 13 वर्षीय बच्ची के परिवार से मिले नितिन कोहली, तेज न्याय और फास्ट–ट्रैक कोर्ट में कार्यवाही का भरोसा

जालंधर २४/०१ (संवाददाता): आम आदमी पार्टी के जालंधर सेंट्रल हल्का प्रभारी नितिन कोहली बुधवार को जालंधर वेस्ट में 13 वर्षीय पीड़ित बच्ची के परिवार के घर पहुंचे। उन्होंने शोक संवेदनाएं व्यक्त करते हुए परिवार को हर संभव सहयोग का भरोसा दिया। मीडिया से बातचीत में कोहली ने कहा कि परिवार जिस असहनीय दर्द से गुजर रहा है, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। उन्होंने आश्वासन दिया कि सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि मामला फास्ट–ट्रैक कोर्ट में सुना जाए, ताकि न्याय में देरी न हो। कोहली ने कहा, "हम परिवार के साथ अंत तक खड़े रहेंगे। आरोपी किसी भी स्थिति में नहीं बचेगा। हमारी पूरी कोशिश होगी कि यह मामला फास्ट–ट्रैक कोर्ट में चले, ताकि दोषी को बिना देरी सबसे कठोर दंड मिल सके।" उन्होंने यह भी कहा कि जिन पुलिस कर्मियों की लापरवाही सामने आएगी, उन पर सख्त कार्रवाई होगी। " माननीय मुख्यमंत्री भगवंत मान ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि लापरवाही किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिस भी पुलिस कर्मी की लापरवाही इस घटना में उजागर होगी, उसके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई होगी," कोहली ने कहा। जालंधर मेयर वनीत धीर भी इस दौरे में शामिल रहे। उन्होंने पीड़ित परिवार से मिलकर गहरा दुख व्यक्त किया और कहा कि नगर निगम प्रशासनिक स्तर पर हर सुविधा और सहायता तत्काल उपलब्ध कराएगा। उन्होंने भरोसा दिलाया कि परिवार को किसी प्रकार की दिक्कत नहीं आने दी जाएगी। पंजाब सरकार के कला और पर्यटन सलाहकार दीपक बाली ने भी सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा, "सरकार किसी भी दोषी को नहीं छोड़ेगी। हम जनता के साथ खड़े हैं। यह किसी दल या सरकार का मुद्दा नहीं, बल्कि जनता का मुद्दा है।" पंजाब के मंत्री और जालंधर वेस्ट के विधायक मोहिंदर भगत ने घटना की तीखी निंदा की। भगत ने कहा, "बच्ची केवल 13 वर्ष की थी। वह अपनी सहेली से मिलने गई थी और उसकी इतनी अमानवीय हत्या कर दी गई। इससे बड़ी त्रासदी क्या हो सकती है? हम परिवार को भरोसा दिलाते हैं कि दोषियों को किसी भी स्थिति में नहीं छोड़ा जाएगा।" भगत ने कहा कि परिवार ने पुलिस टीम पर गंभीर आरोप लगाए हैं कृ "परिवार का कहना है कि पुलिस कर्मी लगभग आधे घंटे तक आरोपी के घर के भीतर रहे, लेकिन बच्ची को ढूंढ नहीं पाए और परिवार को अंदर जाने से रोका। यह स्पष्ट लापरवाही है। ऐसी लापरवाही पर कठोर कार्रवाई होना तय है। हम इस मुद्दे को मुख्यमंत्री के सामने रखेंगे।" उन्होंने परिवार को पूर्ण कानूनी और आर्थिक सहायता देने का आश्वासन भी दिया। "हम परिवार के लिए श्रेष्ठ वकील की व्यवस्था करेंगे। यदि आर्थिक सहायता की जरूरत होगी, तो वह भी उपलब्ध कराई जाएगी।

पराली जलाने की आग में झुलसता उतर भारत : समाधान किसानों और पर्यावरण दोनों के हित में

चंडीगढ। हर वर्ष जब धान की कटाई का मौसम आता है, तब पंजाब और हरियाणा के खेतों से उठने वाला धुआँ आसमान को धुंध से भर देता है। यह केवल खेतों की आग नहीं होती, बल्कि भारत की कृषि नीति, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय असंतुलन की जलती हुई तस्वीर होती है। दिल्ली तथा उसके आस–पास के क्षेत्र इस धुएँ से ढक जाते हैं और वायु गुणवत्ता अत्यंत गंभीर स्तर तक पहुँच जाती है। कानूनी रूप से पराली जलाना प्रतिबंधित है, फिर भी किसान इसे हर साल दोहराते हैं क्योंकि इसके पीछे अनेक सामाजिक और आर्थिक कारण जुड़े हैं। पराली जलाने का मूल कारण खेतों में बचा हुआ धान का ठूँठ होता है। जब धान की फसल कट जाती है, तब खेत में रह गए अवशेष को हटाने के लिए किसानों के पास न समय होता है न साधन। पंजाब और हरियाणा की कृषि व्यवस्था मुख्य रूप से धान और गेहूँ पर आधारित है। सन् 1960 के दशक की हरित क्रांति ने इन राज्यों को देश का अन्न भंडार तो बना दिया, परंतु कृषि को एकरूपी और जलदृप्रधान भी बना दिया। भूजल के अत्यधिक दोहन को रोकने के लिए सन् 2009 में पंजाब में "उपदृजल संरक्षण अधिनियम" लागू किया गया, जिसके अंतर्गत धान की रोपाई जून के अंत तक करने का निर्देश दिया गया ताकि मानसूनी वर्षा का लाभ लिया जा सके। परिणामस्वरूप धान कटाई और गेहूँ की बुवाई के बीच केवल दस से बीस दिन का अंतर रह गया। इतने कम समय में किसान पराली को एकत्रित या सड़ाकर खेत तैयार नहीं कर सकते, इसलिए वे सबसे तेज और सस्ता उपायकृजलानाकृचुन लेते हैं। दूसरा बड़ा कारण आर्थिक है। पराली हटाने या निपटाने के लिए जो मशीनें चाहिएकृजैसे सुपर स्ट्रॉ प्रबंधन प्रणाली, हैप्पी सीडर, बेलर या रोटावेटरकृवे अत्यंत महँगी हैं। छोटे और सीमांत किसान जिनकी जोत तीन हेक्टेयर से भी कम है, वे इन मशीनों को खरीदने या किराए पर लेने में असमर्थ हैं। उदाहरण के लिए, हैप्पी सीडर का किराया लगभग दो से तीन हजार रुपये प्रति एकड़ पड़ता है, जबकि पराली जलाने में केवल माचिस और थोड़े डीजल का खर्च आता है। यही व्यावहारिकता इस समस्या को गहराई तक जकड़े हुए है। तीसरा कारण पराली का कम उपयोग मूल्य है। पंजाब और हरियाणा में बोई जाने वाली अधिकतर धान की किस्में साधारण होती हैं, जिनमें सिलिका की मात्रा अधिक होती है। ऐसी पराली पशु चारे के रूप में प्रयोग योग्य नहीं होती और न ही इससे जैव ईंधन या खाद आसानी से बनाई जा सकती है।

पूर्वी भारत के राज्यों में धान की पराली पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग में आती है, परंतु पंजाबदृहरियाणा में यह उपयोग सीमित है। इसीलिए यहाँ पराली किसानों के लिए किसी आर्थिक लाभ का साधन नहीं बन पाती। चौथा कारण है श्रम की कमी और जोत का विखंडन। प्रवासी मजदूरों की संख्या घट रही है, और छोटे खेतों में मशीनरी लगाने की क्षमता नहीं है। समय की कमी और श्रमिकों के अभाव में किसान अगली फसल बोने की जल्दी में पराली को जला देते हैं। सामाजिक दृष्टि से भी पराली जलाना वर्षों से एक स्वीकृत प्रक्रिया बन चुकी है। किसानों को यह लगता है कि खेत की सफाई का यही सबसे आसान और पारंपरिक तरीका है। कानूनों और जुर्मानों के बावजूद यह प्रथा इसलिए जारी है क्योंकि प्रवर्तन ढीला है और राजनीतिक दबावों के कारण प्रशासन कठोर कार्रवाई नहीं कर पाता। वर्ष 2023 में पंजाब में लगभग साठ हजार पराली जलाने की घटनाएँ दर्ज की गईं, जबकि जुर्माना और निगरानी दोनों व्यवस्था में थे। स्पष्ट है कि केवल प्रतिबंध या दंड इस समस्या को समाप्त नहीं कर सकते। आवश्यक है कि ऐसी रणनीति अपनाई जाए जो किसान की आजीविका और पर्यावरण संरक्षण दोनों को साथ लेकर चले। पहला समाधान है फसल विविधीकरण। पंजाब और हरियाणा की भूमि लगातार धानदृगेहूँ चक्र से थक चुकी है। जल स्तर भी नीचे जा रहा है। अतः मक्का, दलहन, तिलहन और बागवानी फसलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इन फसलों के लिए यदि सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य, बीमा सुरक्षा और निश्चित खरीद सुनिश्चित करे तो किसान धीरे–धीरे धान पर निर्भरता कम कर सकते हैं। हरियाणा की "भावांतर भरपाई योजना" इस दिशा में एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें किसानों को मूल्य अंतर की भरपाई दी जाती है। दूसरा समाधान है यंत्रीकरण और साझा संसाधन। किसानों को मशीनें साझा उपयोग के लिए उपलब्ध कराई जाएँ। पंचायत या सहकारी समितियों के स्तर पर "कस्टम हायरिंग केंद्र" स्थापित हों, जहाँ से किसान कम किराए पर हैप्पी सीडर या सुपर स्ट्रॉ प्रबंधन प्रणाली जैसी मशीनें ले सकें। केंद्र सरकार की "फसल अवशेष प्रबंधन योजना" के अंतर्गत पंजाब और हरियाणा में एक लाख से अधिक मशीनें बाँटी गई हैं, पर इनकी पहुँच सभी किसानों तक नहीं हो पाई है। यदि हर गाँव में सामुदायिक यांत्रिक केंद्र बने, तो किसान पराली जलाने से बचेंगे। तीसरा उपाय है पराली का औद्योगिक उपयोग। पराली को कचरा न मानकर एक संसाधन के रूप में देखा जाए। इससे जैव ऊर्जा, एथेनॉल, कागज, पैकेजिंग और निर्माण सामग्री तैयार की जा सकती है। उदाहरण के लिए, भारतीय तेल निगम की पानीपत जैव रिफाइनरी प्रतिवर्ष लगभग दो लाख टन पराली से एथेनॉल बनाती है। यदि इस प्रकार की परियोजनाएँ हर जिले में स्थापित हों तो पराली किसानों के लिए आय का स्रोत बनेगी और जलाने की आवश्यकता कम होगी। सरकार को परिवहन सहायता, खरीद अनुबंध और स्थायी बाजार उपलब्ध कराने की नीति बनानी चाहिए। चौथा कदम होना चाहिए कृषिदृपर्यावरणीय समय निर्धारण। धान की छोटी अवधि वाली किस्में जैसे पी.आर.126 या डी.आर.आर. धानदृ44 अपनाने से किसानों को फसल कटाई और बुवाई के बीच कुछ अतिरिक्त दिन मिल सकते हैं।

इस समय का उपयोग पराली प्रबंधन में किया जा सकता है। इसके साथदृसाथ परिशुद्ध कृषि यानी सटीक तकनीकी साधनों का प्रयोग, जलदृसिंचाई प्रणाली में सुधार और जैविक खाद उपयोग से भी पर्यावरणीय लाभ मिलेगा। पाँचवाँ, सामुदायिक प्रोत्साहन और जनजागरूकता। पराली न जलाने वाले किसानों को आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाए, गाँव स्तर पर प्रतियोगिता आयोजित हो और "शून्य दहन ग्राम" घोषित किए जाएँ। दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में "पुसा डीकंपोजर" नामक जैविक घोल के प्रयोग से पराली को खेत में ही खाद में बदला जा रहा है। यदि इस तकनीक को बड़े पैमाने पर अपनाया जाए तो पराली जलाने की आवश्यकता नहीं बचेगी। छठा, प्रशासनिक तालमेल और नीतिदृसमन्वय। केंद्र तथा राज्य सरकारों के बीच सामंजस्य होना चाहिए ताकि कृषि, पर्यावरण और ऊर्जा विभाग एक साझा योजना के अंतर्गत काम करें। पराली प्रबंधन को ग्रामीण रोजगार योजना, जैव ऊर्जा मिशन और जलवायु परिवर्तन कार्यक्रमों से जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए, मनरेगा के अंतर्गत पराली एकत्रीकरण या जैव खाद इकाइयों में कार्य को रोजगार से जोड़ा जा सकता है। सातवाँ, शहरीदृग्रामीण सहभागिता भी इस दिशा में उपयोगी होगी। दिल्ली जैसे महानगर जहाँ प्रदूषण का सबसे अधिक प्रभाव होता है, उन्हें अपने सामाजिक उत्तरदायित्व निधि के माध्यम से पंजाबदृहरियाणा के किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

पशु तस्करी मामले में बैंक खातों और लॉकरों की जांच तेज

ज़्योंझर २४/०१ (संवाददाता): ज़्योंझर पुलिस ने भद्रक, मयूरभंज, जाजपुर और ज़्योंझर जिलों में की गई कई छापेमारी, जांच और तलाशी के बाद 10 कथित मवेशी तस्करों को गिरज़्तार किया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी लंबे समय से मवेशियों की अवैध ढुलाई और तस्करी में शामिल थे। गिरज़्तार किए गए सभी लोगों को सोमवार को कोर्ट में पेश किया गया। पुलिस ने भद्रक के रहने वाले शेख ताजुद्दीन उर्फ राजन को इस मामले में मुज़्य आरोपी बताया है। उसकी गिरज़्तारी के बाद कई जिलों में कोऑर्डिनेटेड ऑपरेशन चलाए गए, जिसके परिणामस्वरूप कथित तस्करी नेटवर्क के अन्य सदस्यों को भी हिरासत में लिया गया।

बैंक खाते और लॉकर जांच के दायरे में विज़ीय जांच के तहत, पुलिस गिरज़्तार आरोपियों से जुड़े लगभग 50 बैंक खातों की जांच करेगी और 20 से ज़्यादा लॉकर खोलेगी। अधिकारियों ने बताया कि इस कार्रवाई का मकसद विज़ीय लेन-देन का पता लगाना और अवैध मवेशी व्यापार से कथित तौर पर हासिल की गई संपज़ियों का आकलन करना है। दो दिन पहले, ज़्योंझर पुलिस ने पांच जिलों में कई जगहों पर बड़े पैमाने पर छापेमारी की थी। इस ऑपरेशन के दौरान, आरोपियों से जुड़े घरों, बैंक जमा, ज़मीन और अन्य संपज़ियों को ज़ज़्त किया गया।

नकद, सोना, वाहन ज़ज़्त पुलिस ने बताया कि ज़ज़्त की गई चीज़ों में 1.52 करोड़ रुपये से ज़्यादा नकद, 1 किलो 131 ग्राम सोना, 3 किलो 80 ग्राम चांदी, 23 चार-पहिया वाहन, 23 दो-पहिया वाहन, 13 मोबाइल फोन और 21 कलाई घड़ियां शामिल हैं। अधिकारियों ने बताया कि बरामद कलाई घड़ियां महंगी मानी जा रही हैं, और उनकी असली बाज़ार कीमत पता लगाने के लिए संबंधित कंपनियों से संपर्क किया गया है। पुलिस के अनुसार, 2025 में, दैतारी पुलिस ने मवेशी तस्करी के एक ऑपरेशन को रोकने की कोशिश की थी, जिसके दौरान तस्करों ने कथित तौर पर पुलिसकर्मियों पर गाड़ी चढ़ा दी, जिससे दो अधिकारी घायल हो गए। इस घटना के बाद निगरानी बढ़ा दी गई, और लगभग आठ महीने बाद, पांच जगहों पर एक साथ छापेमारी की गई, जिससे आखिरकार 46 अन्य जगहों से लिंक का पता चला। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जांच सिर्फ गिरज़्तारी पर ही नहीं, बल्कि तस्करी नेटवर्क की विज़ीय रीढ़ को खत्म करने पर भी केंद्रित है। जांचकर्ताओं ने बताया कि शेख ताजुद्दीन के पास कथित तौर पर 10 से ज़्यादा लॉकर हैं, जिनकी जांच उसके बैंक खातों के साथ की जाएगी। करोड़ों की संपज़ि अटैच होने की संभावना- बलराम साहू की गुमशुदगी में गांजा कारोबार और गर्लफ्रेंड पर शक पुलिस सूत्रों ने बताया कि 50 लाख रुपये से ज़्यादा की संपज़ि पहले ही पहचान ली गई है, और आगे की जांच में कई करोड़ रुपये की और संपज़ियों का पता चल सकता है, जिन्हें कानून के मुताबिक अटैच और ज़ज़्त किया जाएगा। सूत्रों ने यह भी बताया कि आरोपी के बांग्लादेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और झारखंड से भी संबंध हो सकते हैं, हालांकि अभी तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। पुलिस ने कहा कि जांच जारी है और चेतावनी दी है कि रैकेट से जुड़े किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सज़्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

राउरकेला इस्पात सयंत्र में सेल की सभी ज़्लास्ट फर्नेस की क्षमता ढाँचा पर कार्यशाला आयोजित

राउरकेला २४/०१ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) में सेल में ज़्लास्ट फर्नेस की क्षमता ढांचा पर 3-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। 17 जनवरी, 2026 को तरंगिनी, मंदिरा डैम में आयोजित आरएसपी के पूर्व निदेशक प्रभारी, डॉ. अतनु भौमिक और कार्यक्रम के विशेषज्ञ मध्यस्थ मुज़्य महाप्रबंधक (सामग्री प्रबंधन), श्री टी विनोद के साथ समापन सत्र में उपस्थित थे। विशेष रूप से, कार्यशाला में सेल की विभिन्न इकाइयों की ज़्लास्ट फर्नेस में काम करने वाले अधिकारियों ने भाग लिया। डॉ. भौमिक, जिनके पास ज़्लास्ट फर्नेस और लौह निर्माण में तीन दशकों से अधिक का समृद्ध अनुभव है, ने ज़्लास्ट फर्नेस संचालन के लिए एक संरचित क्षमता ढांचा विकसित करने पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा की। उन्होंने परिचालन दक्षता, सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ाने के लिए सेल इकाइयों में ज्ञान साझा करने, कौशल विकास और सर्वोज़ाम प्रथाओं के मानकीकरण के महत्व पर ज़ोर दिया। श्री विनोद ने कार्यशाला के सफल संचालन पर प्रसन्नता व्यक्त की और विभिन्न सेल इकाइयों के अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की। शुरुआत में, प्रतिभागियों ने समूह चर्चाओं में भाग लिया, और ज़्लास्ट फर्नेस संचालन में दक्षता, सुरक्षा और विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए विचार प्रस्तुत किए। विशेषज्ञ मॉडरेटर ने प्रत्येक विचार का विश्लेषण किया और मूल्यवान अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन प्रदान किया।

इससे पहले, कार्यशाला 15 जनवरी, 2026 को सीपीटीआई ऑडिटोरियम में आयोजित उद्घाटन सत्र के साथ शुरू हुई थी। कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन), श्री तरुण मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता की। मुज़्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन- ज्ञानार्जन एवं बिकास), श्री पी. के. साहू और महाप्रबंधक (एमटीआई), श्री श्रीमंत मलिक भी मंच पर उपस्थित थे।

कार्यशाला के पहले दो दिनों में सिंडिकेट चर्चाओं, विस्तृत मंथन और योग्यता ढांचे को अंतिम रूप देने पर केंद्रित थे।

सेज़्टर 9 में गैस पाइपलाइन फटने से हड़कंप

कटक २४/०१ (संवाददाता): कटक के ष्ष्ठ सेज़्टर 9 में सोमवार को भारी मशीनों से चल रहे कंस्ट्रज़्शन के काम के दौरान LPG गैस पाइपलाइन फटने से इलाके के लोगों में दहशत फैल गई। इस घटना से इलाके में गैस लीक हो गई, जिसके बाद तुरंत लोगों को वहां से निकाला गया और स्थानीय लोगों में सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा हो गईं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, साइट पर कंस्ट्रज़्शन का काम चल रहा था, तभी पाइपलाइन डैमेज हो गई। लीकेज का पता चलते ही, स्थानीय लोगों ने दूसरों को अलर्ट किया और एहतियात के तौर पर लोगों से इलाका खाली करने को कहा। आने-जाने वालों को किसी भी संभावित दुर्घटना से बचने के लिए दूर रहने की चेतावनी दी गई। फायर सर्विस और गैस पाइपलाइन कंपनी के अधिकारी मौके पर पहुंचे और बिना किसी देरी के मरज़्मत का काम शुरू किया। स्थिति को कंट्रोल में कर लिया गया और किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है। पेट्रोल पंप के पास होने के कारण सुरक्षा चिंताएं इस घटना से खतरा बढ़ गया है ज़्योंकि डैमेज पाइपलाइन एक पेट्रोल पंप के पास है। निवासियों ने बताया कि इलाके में अंडरग्राउंड गैस पाइपलाइन होने के संकेत देने वाले चेतावनी बोर्ड लगाए गए थे और साइट पर कंस्ट्रज़्शन का काम मना था। उन्होंने कहा कि पास में अत्यधिक ज्वलनशील पदार्थ होने के कारण एक छोटी सी चिंगारी भी बड़ी आपदा का कारण बन सकती थी।

सवाल उठाए गए हैं कि कंस्ट्रज़्शन के काम की इजाज़त किसने दी और ज़्या प्रतिबंधित क्षेत्र में मशीनरी लगाने से पहले स्टैंडर्ड सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किया गया था। प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और आधिकारिक प्रतिक्रिया एक स्थानीय पार्षद ने बताया कि गैस लगभग 50 फीट की ऊंचाई तक लीक हो रही थी, जिससे बहुत खतरनाक स्थिति पैदा हो गई थी। उन्होंने कहा, किस्मत से, किसी ने मोबाइल फोन इस्तेमाल नहीं किया, कोई गाड़ी उस इलाके से नहीं गुज़री, और किसी ने सिगरेट नहीं जलाई। सड़क किनारे सज़्ज़ी बेचने वाले अपना सामान छोड़कर मौके से भाग गए।

जंगली सूअर किसानों के लिए बन गए हैं बुरा सपना

केंद्रपाड़ा २४/०१ (संवाददाता): ज़िले के राजनगर और महाकालपाड़ा इलाकों में जंगली सूअरों के उनकी खड़ी धान की फ़सलों को नुकसान पहुँचाने की वजह से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है। कई लोगों के लिए, जंगली सूअरों का होना किसी मुसीबत से कम नहीं है, जिससे उन्हें अपने खेतों की रखवाली के लिए रात भर जागना पड़ रहा है। राजनगर ज़्लॉक के राजेंद्रनारायणपुर, गोबिंदपुर, परमानंदपुर, नलितापटिया और दूसरे गाँवों में फ़सलों को बहुत ज़्यादा नुकसान होने की खबर है। किसानों का कहना है कि जंगली सूअर अज़्सर अंधेरा होने के बाद खेतों में घुस आते हैं, और कटाई के करीब धान के खेतों को बर्बाद कर देते हैं, जिससे किसान परेशान हो जाते हैं।एक किसान ने कहा, जंगली सूअर हमारी फ़सलों को बर्बाद कर रहे हैं, इसलिए हमें रात में जागकर पहरा देना पड़ रहा है। कोई भी जानवर आ जाए, हमारे पास रात भर अपने खेतों की रखवाली करने के अलावा कोई चारा नहीं है।

आरोप है कि फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट में बार-बार शिकायत करने के बावजूद, प्रभावित किसानों का कहना है कि अब तक कोई सही कार्रवाई नहीं हुई है। उनका आरोप है कि अधिकारी सुरक्षा के उपाय या मुआवज़ा देने में नाकाम रहे हैं, जिससे नुकसान बढ़ने से उनकी निराशा और बढ़ रही है। जंगली सूअरों का खतरा बना हुआ है, इसलिए किसानों को इस मौसम में पैसे की भारी तंगी का डर है। वे अपनी फसलों को बचाने और यह पक्का करने के लिए कि उनकी रोजी-रोटी और खतरे में न पड़े, फॉरेस्ट डिपार्टमेंट से तुरंत दखल देने की मांग कर रहे हैं। बढ़ता तनाव इस बात को दिखाता है कि इस इलाके में इंसान-जानवरों के बीच टकराव को कम करने के लिए मिलकर काम करने की तुरंत ज़रूरत है।

ट्रेलर की टक्कर से वृद्ध गंभीर

राउरकेला २४/०१ (संवाददाता): सुंदरगढ़ जिले के हेमगिर थाना अंतर्गत कांधडुड़ा गांव में रविवार की शाम को ट्रेलर की टक्कर से वृद्ध गिर गए। गंभीर अवस्था में उन्हें पहले हेमगिर सरकार अस्पताल फिर वहां से बेहतर इलाज के लिए सुंदरगढ़ अस्पताल स्थानांतरित किया गया है।

ओडिशा में ठंड कम होने से भुवनेश्वर का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंचा

भुवनेश्वर २४/०१ (संवाददाता): भुवनेश्वर के लोगों को सर्दियों की ठंड से राहत मिली है, ज़्योंकि इस मौसम में पहली बार दिन का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस के पार चला गया है। सूरज के उज़्र की ओर बढ़ने के साथ, राज्य की राजधानी में रविवार को अधिकतम तापमान 30.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो पारे में बढ़ोतरी और पहले से बनी ठंड की स्थिति में कमी का संकेत देता है। रात के तापमान में भी बढ़ोतरी का रुझान दिख रहा है, जिससे सुबह की ठंड से राहत मिल रही है। मौसम विभाग के अनुसार, मौसम की स्थिति में यह बदलाव सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ के कारण हो रहा है, जो इस क्षेत्र में गर्म, नमी वाली हवाएँ ला रहे हैं।

नतीजतन, ठंड की तीव्रता कम हो गई है, और अगले कुछ दिनों में रात के तापमान में और बढ़ोतरी होने की उज़्मीद है।पूरे राज्य में बढ़ते तापमान 18 जनवरी को ओडिशा के कई हिस्सों में गर्मी का रुझान साफ दिख रहा था। झारसुगुड़ा में अधिकतम तापमान 32.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि परलाखेमुंडी में 31.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

सुंदरगढ़ में 31.6 डिग्री सेल्सियस, नबरंगपुर में 30.8 डिग्री सेल्सियस, और टिटलागढ़ और भवानीपटना दोनों में अधिकतम तापमान 30.5 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी की है कि अगले चार दिनों में पूरे राज्य में न्यूनतम तापमान में 2 से 4 डिग्री सेल्सियस का उतार-चढ़ाव हो सकता है।कोहरे की स्थिति बनी रहेगी तापमान में बढ़ोतरी के बावजूद, कटक, खुर्दा, पुरी, जगतसिंहपुर, केंद्रपाड़ा और कालाहांडी सहित कई जिलों में कोहरे वाला मौसम जारी रहने की संभावना है।

अधिकारियों ने कम विजिबिलिटी के कारण सुबह और देर रात के घंटों में लोगों को सावधानी बरतने की सलाह दी है। तापमान में मौजूदा बढ़ोतरी से भुवनेश्वर और ओडिशा के अन्य हिस्सों में सर्दियों की स्थिति से अस्थायी राहत मिली है, फिर भी लोगों को आने वाले दिनों में कोहरे और बदलते मौसम के पैटर्न के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी गई है।

आरएसपी द्वारा आयोजित 58वें वार्षिक उद्यानकृषि प्रदर्शनी में 262 पुरस्कार प्रदान

राउरकेला २४/०१ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आर.एस.पी.) के उद्यानकृषि विभाग द्वारा जुबली पार्क में आयोजित 58वें वार्षिक उद्यानकृषि प्रदर्शनी-2026 में, फूल, पज़े, फल, सज़्जियां, फूलों की सजावट, गार्डन ले-आउट आदि विभिन्न श्रेणियों में 262 पुरस्कार प्रदान किए गए। समापन समारोह में कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन), श्री तरुण मिश्र मुज़्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के अन्य सज़्मानित अतिथि कार्यपालक निदेशक (खान विकास, सी.एम.एल.ओ.), श्री बी के गीरी, कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन), श्री अनिल कुमार, उपाध्यक्ष (दीपिका महिला संघति), श्रीमती रीता रानी, मुज़्या महा प्रबंधक (नगर इंजीनियरिंग एवं उद्यानकृषि), श्री बी.के.जोजो, महा सचिव (डी.एम.एस.), श्रीमती सारिका कुमार थे। संयंत्र के कई वरिष्ठ अधिकारी और बड़ी संज़्या में आगंतुक इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुज़्य अतिथि ने कट फूल, गमले में लगे पौधे, फल और सज़्जियों के सभी श्रेणियों में सबसे ज़्यादा कुल अंक हासिल करने के लिए बी.-161, सेज़्टर-6 के निवासी श्री नीलमणि परिडा को डी.आई.सी. चैंपियन ट्रॉफी के साथ 6,000/- रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया। उन्होंने एच.-172, सेज़्टर-6 के निवासी श्री नटबर राणा को डी.आई.सी. रनर अप ट्रॉफी के साथ 4000/- रुपये का नकद पुरस्कार भी प्रदान किया।

सज़्मानित अतिथियों ने गार्डन लेआउट और उद्यानकृषि प्रदर्शनी के तहत विभिन्न श्रेणियों के पुरस्कार प्रदान किए। श्री नीलमणि परिडा ने कट फूल, गमले वाले पौधों और सज़्जियों और फलों के सभी श्रेणियों में सबसे ज़्यादा कुल अंक हासिल करने के लिए ट्रॉफी भी जीती। उन्होंने गुलदाउदी के सर्वश्रेष्ठ नमूने के फूल की ट्रॉफी भी जीती। श्रीमती आरती स्वाफई, बी.-157, कोयल नगर ने हाइब्रिड टी रोज़ हेडलाइनर किस्म के सर्वश्रेष्ठ नमूने के फूल के लिए किंग ऑफ़ द शो और हाइब्रिड टी रोज़ किस्म 'मार्चेन कोनिगिन' के दूसरे सर्वश्रेष्ठ नमूने के फूल के लिए क्वीन ऑफ़ द शो दोनों ट्रॉफियां जीतीं।

इस अवसर पर एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। श्री बी.के.जोजो ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया, जबकि उप महा प्रबंधक (उद्यानकृषि) आर. जेड.डी.पी. प्रभारी, डॉ. ए.के.बिस्वास ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उप महा प्रबंधक (सी.एस.आर.), श्री टी.बी.टोप्पो कार्यक्रम के मंच संचालक थे।

इस शो में कटे फूल, गमले वाले पौधे, फल, सज़्जियां, बोनसाई, डिनर बाउल अरेंजमेंट, सबसे अच्छी तरह से सजाए गए फूल, बटन होल, गुलदस्ता, माला (गुलाब के अलावा) और फूलों और पज़ियों से बने मॉडल जैसी विभिन्न श्रेणियों में 963 एंट्रीज़ थी। बड़ी संज़्या में दर्शक जुबली पार्क में उमड़े और प्रदर्शित फूलों, सज़्जियों और फलों की अनगिनत किस्मों की सराहना की, जैसे कि गुलाब की किस्में, गुलदाउदी, डहलिया, डायन्थस, स्वीट पीज़, एंटीरिनम, कार्नेशन्स, कैलेंडुला, ज़्लॉज़्स, पैन्सी, जरबेरा, ल्यूपिन, गेंदा, एस्टर, साल्विया, ग्लेडियोली, कैंडिटफ़्ट और भी बहुत कुछ शामिल था ।